दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

7

3 डबल मर्डर से दहला गोरखपुर

5 पत्नी का कत्ल

8 क्या टीम इंडिया की शर्मनाक हार के जिम्मेदार गंभीर

UPHIN/2023/90814 | वर्ष: 03, अंक: 23 | पृष्ठ संख्या: 8 | मूल्य: 1.00 रू. | सोमवार 01 दिसम्बर ,2025

हवा और कोहरा से बढ़ेगी गलन...

यूपी का मौसम

लखनऊ, कानपुर, आगरा, मेरठ, बरेली, गोरखपुर, मुरादाबाद, अयोध्या सहित कई शहरों में शुक्रवार को ठंडी हवा चलने से न्यूनतम तापमान में गिरावट देखने को मिली थी। तापमान में गिरावट की वजह से सुबह शहर के खुले क्षेत्रों में कोहरा देखने को मिल सकता है। धूप निकलने पर कोहरा छंटेगा, लेकिन सामान्य से तापमान कम रहने का अनुमान है। वहीं शाम को तापमान में गिरावट आने से ठंड बढ़ेगी। कई शहरों में अधिकतम तापमान 25.5 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 9.8 डिग्री सेल्सियस रहा। सामान्य से अधिकतम तापमान 0.6 डिग्री सेल्सियस कम और न्यूनतम तापमान 2.7 डिग्री सेल्सियस कम रहा।

उत्तर प्रदेश में मौसम तेजी से बदल रहा है। मौसम विभाग ने अगले 24 घंटों में हवा और कोहरे के कारण ठंड बढ़ने की भविष्यवाणी की है। तापमान में गिरावट और कोहरे के कारण दृश्यता कम होने की संभावना है। लोगों को सावधानी बरतने की सलाह दी ग है। हवा की गति बढ़ने से ठंड और बढ़ सकती है।

लखनऊ,संवाददाता। यूपी का मौसम अब सर्द होना शुरू हो गया है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार अधिकतम तापमान में गिरावट देखने को मिल सकती है, जबकि न्यूनतम तापमान स्थिर रहेगा। सुबह हल्का कोहरा रहेगा, जो धूप निकलने पर छंट जाएगा।

गोरखपुर में सीएम योगी ने जनता दर्शन में सुनी समस्याएं

बोले- बिना चिंता कराएं इलाज, सरकार करेगी भरपूर आर्थिक मदद

सीएम योगी ने सुनी जनता की समस्याएं, इलाज के लिए आर्थिक मदद का वादा, अधिकारियों को प्राथमिकता से समाधान के निर्देश

संवाददाता, गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनता दर्शन में गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए आर्थिक सहायता की मांग करने पहुंचे लोगों को आश्वस्त किया कि वह बिना चिंता किए उच्चीकृत अस्पतालों में इलाज कराएं, सरकार उनकी भरपूर आर्थिक मदद करेगी। उपचार में जो भी धनराशि खर्च होगी, उसकी व्यवस्था सरकार करेगी। सीएम योगी ने इसे लेकर अफसरों को निर्देशित भी किया कि जिन लोगों को उपचार में आर्थिक सहायता की आवश्यकता है, उनके इस्टीमेट की प्रक्रिया को जल्द से पूरा कराकर शासन को उपलब्ध कराया जाए।

हर जरूरतमंद को मुख्यमंत्री विवेकाधीन कोष से पर्याप्त सहायता राशि उपलब्ध कराई जाएगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार देर शाम गोरखपुर पहुंचे थे। गोरखनाथ मंदिर में रात्रि प्रवास के बाद शनिवार सुबह उन्होंने गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन में करीब 200 लोगों से मुलाकात की। मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सभागार में कुर्सियों पर बैठाए गए लोगों से एक–एक करके समस्याएं सुनीं और निस्तारण के लिए आश्वस्त करते हुए उनके प्रार्थना पत्र संबंधित अधिकारियों को हस्तगत किए।

उन्होंने सभी लोगों को आश्वस्त किया कि किसी को भी परेशान होने या घबराने की आवश्यकता नहीं है। हर समस्या का प्रभावी समाधान कराया जाएगा।

गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन में आये हुए लोगों की समस्याओं को सुनते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

गोरखपुर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनता दर्शन में लोगों की शिकायतें सुनीं। उन्होंने कहा कि सरकार इलाज के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करेगी और किसी को भी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। सीएम योगी ने अधिकारियों को लोगों की समस्याओं को प्राथमिकता से हल करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे जनता की समस्याओं पर पूरी गंभीरता और संवेदनशीलता से ध्यान देकर उनका त्वरित, गुणवत्तापूर्ण और संतुष्टिपरक निस्तारण कराएं ताकि किसी को भी परेशान न होना पड़े। हर पीड़ित के साथ संवेदनशील रवैया अपनाया जाए और उसकी समस्या का समाधान कर उसे संतुष्ट किया जाए। इसमें किसी भी तरह की कोताही नहीं होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि कहीं कोई जमीन कब्जा या दबंगई कर रहा हो तो उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाए। पारिवारिक मामलों के निस्तारण में दोनों पक्षों को एकसाथ बैठाकर संवाद करने को प्राथमिकता दी जाए।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को यह निर्देश भी दिए यदि कोई पात्र व्यक्ति शासन की कल्याणकारी योजनाओं के लाभ से वंचित है तो उसे तत्काल योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराया जाए।

बजरी से भरा डंपर कार पर पलटा, परिवार के 7 लोगों की मौत

जा रहे थे अंतिम संस्कार में शामिल होने

सहारनपुर,संवाददाता। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में शुक्रवार सुबह एक भीषण सड़क हादसे में एक ही परिवार के सात लोगों की मौत हो गई. बजरी से भरा एक तेज रफ्तार डंपर अनियंत्रित होकर एक कार पर पलट गया. मृतक परिवार सैयद माजरा गांव से गंगोह में एक अंतिम संस्कार में शामिल होने जा रहा था, तभी गांव से 1 किलोमीटर दूर मौत उनका रास्ता रोककर खड़ी हो गई. पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और जांच जारी है।

ब्रिज से रेलवे ट्रैक पर गिरा ट्रक

मौत के मुहाने पर थे 1600 यात्री बड़ी खामी उजागर, पूरा सिस्टम जिम्मेदार

बाराबंकी ,संवाददाता। रेलवे ओवर ब्रिज के नीचे से गरीब रथ गुजर रही थी। इसी समय बगल वाले ट्रैक पर ब्रिज की रेलिंग तोड़ते हुए करीब 25 फीट नीचे मोरंग से ओवरलोड ट्रक आ गिरा। इससे पूरी गरीब रथ ट्रेन हिल गई। उसमें सवार 1600 यात्री सहम गए।

यूजीसी की सख्ती से परीक्षा में देरी पर सवाल,प्रथम सेमेस्टर का फार्म अभी अधूरा, 10 दिसंबर तक परीक्षा कराने का दावा

गोरखपुर विश्वविद्यालय में परीक्षा की देरी पर उठे सवाल

संवाददाता, गोरखपुर। समय से परीक्षा सम्पन्न कराने और सत्र को हर हाल में नियमित रखने को लेकर विश्वविद्यालयों पर यूजीसी (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) की कड़े रुख के बाद दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की परीक्षा व्यवस्था पर भी सवाल उठे हैं। सवाल के परिप्रेक्ष्य में जब दैनिक जागरण ने विश्वविद्यालय की व्यवस्था की पड़ताल की तो पाया कि परीक्षा पहले के मुकाबले काफी हद तक नियमित हुई है, बावजूद इसके थोड़ी कमी आज भी देखी जा रही है। शैक्षणिक कैलेंडर में तय तिथि पर विश्वविद्यालय प्रशासन परीक्षा शुरू कराने में सफल नहीं हो सका है। तमाम प्रयास के बाद भी परीक्षा को तय तिथि से नौ दिन बाद शुरू कर सका है। विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड किए गए शैक्षणिक कैलेंडर के मुताबिक विषम सेमेस्टर की परीक्षाएं 11 नवंबर से शुरू होनी चाहिए थे लेकिन विश्वविद्यालय प्रशासन उसे नौ दिन की देरी यानी 20 नवंबर से संचालित कर सका।

इंटरनल नंबर अपलोड करने की प्रक्रिया भी अभी अधूरी है। यही नहीं, प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा तो विषय सेमेस्टर की परीक्षा का हिस्सा भी नहीं बन सकी है। दरअसल प्रथम सेमेस्टर के परीक्षा फार्म अभी पूर्ण नहीं कराए जा सके हैं। इस परीक्षा में देरी के पीछे की वजह विश्वविद्यालय प्रशासन संबद्ध कालेजों में देर तक चली प्रवेश प्रक्रिया बता रहा है। दबी जुबान से समर्थ पोर्टल पर पंजीकरण की अनिवार्यता को भी दोषी ठहरा रहा है।

यूजीसी की सख्ती के बाद गोरखपुर विश्वविद्यालय की परीक्षा व्यवस्था पर सवाल उठ रहे हैं। विषम सेमेस्टर की परीक्षाएं 11 नवंबर से शुरू होनी थीं, लेकिन 20 नवंबर से शुरू हुईं। प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा अभी तक शुरू नहीं हो सकी है क्योंकि परीक्षा फार्म अभी तक पूरे नहीं भरे गए हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन देरी के लिए कॉलेजों में प्रवेश प्रक्रिया को जिम्मेदार ठहरा रहा है, लेकिन 10 दिसंबर तक परीक्षाएं पूरी करने का दावा कर रहा है।

उधर विश्वविद्यालय प्रशासन इसे मामूली देरी बता रहा है और शैक्षणिक कैलेंडर में परीक्षा सम्पन्न होने की तिथि 10 दिसंबर तक परीक्षाओं को पूर्ण किए जाने का दावा कर रहा है।

बावजूद इसके उसपर प्रक्रियात्मक सवाल यह उठ रहा है कि जब प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाओं को अभी पूरी तरह फार्म ही नहीं भरा सका है तो निर्धारित तिथि से पहले परीक्षा कैसे संभव हो सकेगी?

यूजीसी की चेतावनी के बाद यह मुद्दा और भी महत्वपूर्ण हो गया है कि विश्वविद्यालय परीक्षा समय से सम्पन्न कराने में किस हद तक सफल होता है। आगामी दो सप्ताह अब यह तय करेंगे कि विश्वविद्यालय प्रशासन का दावा कितना मजबूत है और उसकी व्यवस्था कितनी व्यवस्थित।

क्या है यूजीसी की चेतावनी

यूजीसी ने देशभर के उच्च शिक्षण संस्थानों को समय पर परीक्षा न कराने और परिणाम जारी करने में देरी पर कड़ा रुख अपनाया है। यूजीसी ने साफ कहा है कि समय पर परीक्षा आयोजित न होने से विद्यार्थियों का भविष्य प्रभावित होता है। देरी से सत्र लंबे खिंचते हैं, जिससे विद्यार्थी आगे की पढ़ाई, प्रतियोगी परीक्षाओं या रोजगार के अवसरों के लिए समय पर पात्र नहीं हो पाते। आयोग ने यह भी बताया है किया कि देश में इस समय 1100 से अधिक विश्वविद्यालय समय से परीक्षा संचालित नहीं कर रहे हैं। शैक्षणिक सत्र को समयबद्ध करने में विफल साबित हो रहे हैं। इनमें 30 केंद्रीय विश्वविद्यालय भी शामिल हैं।

ऐसा गांव जहां अब तक नहीं पहुंची बिजली

कई बार खंभे लगे पर नहीं दौड़े तार, रोशनी के लिए मोमबत्ती का सहारा

लखनऊ,संवाददाता। यूपी के सीतापुर जिले में एक ऐसा गांव हैं जहां आजादी के 78 साल भी बिजली नहीं पहुंच सकी है। अब उस गांव में लड़कों की शादी नहीं हो रही। यूपी के सीतापुर में एक गांव में अभी मूलभूत सुविधाएं भी नहीं पहुंच सकी हैं। आजादी के 78 साल बीत जाने के बाद अभी भी इस गांव के लोग रात में रोशनी के लिए मोमबत्ती का सहारा लेते हैं। मामला सीतापुर जिले के बसावनपुर के ग्राम अन्नीपुर का है। यहां आजादी के बाद अब भी बुनियादी सुविधाओं का टोटा है। गांव में करीब 45 घर हैं। लगभग 700 की आबादी वाले इस गांव में एक प्राथमिक विद्यालय है। ग्रामीण जयंती लाल वर्मा बताते हैं कि देश की आजादी के 78 साल बाद भी गांव की सूरत नहीं बदल सकी है। गांव में विद्युतीकरण नहीं हो सका है।

सम्पादकीय

'ही मैन' दिवंगत नहीं

आम आदमी का सुपर स्टार, खूबसूरती का प्रतीक, यूनानी देवता–सा, दिलीप कुमार का 'ही मैन', शबाना आजमी का 'बहुमूल्य मर्द', जिंदा दिल इनसान, दयालु, ईमानदार, मिलनसार और मददगार आत्मा का प्राणी३ऐसे शख्स का अंत कैसे हो सकता है? वह दिवंगत कैसे हो सकता है? उसके कला–युग का अध्याय समाप्त कैसे माना जा सकता है? बेशक धर्मेन्द्र का पार्थिव शरीर अब हमारे बीच टहलता–घूमता दिखाई न दे, लेकिन 300 से अधिक फिल्मों में उन्होंने जो किरदार निभाए हैं, वे तो अजर, अमर, अनंत हैं। उन्हें दिवंगत कौन और कैसे कर सकता है? धर्मेन्द्र उस दौर में फिल्मों में आए, जब दिलीप कुमार, राजकपूर, देवानंद, राजकुमार आदि अभिनेताओं का वर्चस्व था। लोग उनके अभिनय के कायल थे। वे जीवंत कथानक थे, जिनके इर्द–गिर्द फिल्में बुनी जाती थीं। धरम जी ने उनके बीच 'बंदिनी', 'सत्यकाम', 'अनुपमा', 'फूल और पत्थर' सरीखी फिल्मों के जरिए अपना स्थान बनाया। धर्मेन्द्र को नाचना नहीं आता था अथवा यूं कहा जाए कि उनके नृत्य की शैली और अंदाज निराले थे। लगभग अमिताभ बच्चन की तर्ज पर३! देश के आम आदमी और दर्शक ने उसी रूप में धर्मेन्द्र को स्वीकार किया, मान्यता दी और सुपर स्टार बनाया। राजेश खन्ना बॉलीवुड के प्रथम सुपर स्टार घोषित किए गए। धर्मेन्द्र तब भी प्रासंगिक बने रहे। छह दशकों से लंबे करियर में उन्होंने 32 फिल्में स्वर्ण जयंती और 107 फिल्में रजत जयंती वाली दीं। यानी एक साथ 25 और 50 सप्ताह फिल्म, एक ही थियेटर में, चला करती थी। आज वह चलन और स्थायित्व लगभग समाप्त हो चुका है। अमिताभ बच्चन के 'यंग एंग्रीमैन' का जादू सिने दर्शकों पर छाने लगा था, तो वह 'सदी के महानायक' बन गए, लेकिन आम आदमी और दर्शकों के महानायक, सही मायनों में, धर्मेन्द्र ही बने रहे। उनके अभिनय और किरदारों के आयाम इतने व्यापक और विविध थे कि क्या ऐसा कलाकार कभी दिवंगत हो सकता है? धर्मेन्द्र ने परदे पर 10–15 गुंडों की एक साथ धुनाई की, तो वह यथार्थ लगा। दर्शक को एहसास होता था कि 'ही मैन' ऐसी पिटाई कर सकता है। उन्होंने संजीदा भूमिकाएं भी निभाईं और आंखों में आंसू भी दिखे। वह आशिक मिजाज भी थे, लिहाजा उनके रोमांटिक किरदार भी प्रेम करते लगते थे। धरम जी कई बार 'इंडियन आइडल' के मंच पर आए। उस दौरान उनका शायराना किरदार भी सामने आया। धर्मेन्द्र की कॉमेडी बड़ी सहज, सरल, गुदगुदा देने वाली होती थी। इस संदर्भ में कोई भी ऋषिकेश दा' की फिल्म 'चुपके–चुपके' के परिमल त्रिपाठी को भूल नहीं सकता। यकीनन धर्मेन्द्र का फिल्मी करियर बहुआयामी था। क्या ऐसा व्यक्तित्व दिवंगत हो सकता है? मानव शरीर क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा इन पंचतत्त्वों का बना है। उनका दाह–संस्कार कर दिया गया, लेकिन एक कलाकार की कला के जो साक्ष्य आज भी हमारे साथ हैं, वह कैसे मर सकता है? जिस तरह वह पंजाब के एक छोटे–से गांव से आकर बॉलीवुड में स्थापित हुए थे और एक युग के रचनाकार बन गए थे, उसी तरह धर्मेन्द्र युवा पीढ़ी के पंजाबियों के सपनों को बखूबी जानते थे, लिहाजा उनका घर उन स्वप्नजीवियों का भी 'मिनी पंजाब' होता था। एक महानगर में एक छत, आवास, खान–पान और सोने को बिस्तर धरम जी ने न जाने कितनों को मुहैया कराए। वे संघर्ष के दौर के बाद अभिनेता भी बने, लेकिन धरम जी घर के बुजुर्ग की छाया सरीखे बने रहे। निश्चित रूप से वह किसी भी तरह के अहंकार से परे, सिर्फ मानवीय थे। बेशक आज वह पार्थिव तौर पर दिवंगत हो चुके हैं, लेकिन आज हमें गम नहीं करना चाहिए। यह उत्सव, समारोह का समय है। धरम जी ने 89 लंबे सालों की भरी–पूरी जिंदगी जी। भरा–पूरा परिवार है। एक अविस्मरणीय विरासत है, लेकिन उन चेहरों पर, उनके विवेक पर, कोफ्त होती है, जिन्होंने धर्मेन्द्र को 'दादा साहब फाल्के सम्मान' के लायक नहीं समझा। यह फिल्मी सर्वोच्च सम्मान उन्हें 10–15 साल पहले ही मिल जाना चाहिए था। उन्हें किसी भी किरदार के लिए 'फिल्म फेयर अवार्ड' भी नहीं दिया गया। अलबत्ता 'जीवन भर की उपलब्धियों के लिए फिल्म फेयर अवार्ड' जरूर दिया गया। धरम जी को क्या फर्क पड़ता था। उनके सम्मान तो करोड़ों दर्शक थे। बहरहाल, उन्हें श्रद्धांजलि।

राम ही सनातन नह

अयोध्या के भव्य, दिव्य श्रीराम मंदिर के शिखर पर धर्म–ध्वजा फहराने के साथ ही मंदिर की शास्त्रीय प्रक्रिया परिपूर्ण हो गई। राम मंदिर संपूर्ण और सार्थक हो गया। प्रधानमंत्री मोदी का कथन उचित है कि सदियों के घाव और दर्द अब भर रहे हैं। सदियों की वेदना आज विराम पा रही है, क्योंकि 500 साल पुराना संकल्प आखिर पूरा हुआ है। यकीनन यह राम मंदिर के संकल्प रूपी यज्ञ में पूर्णाहुति की बेला है। यह सनातन धर्म की ध्वजा पुनर्जागरण की पताका है। प्रधानमंत्री ने अयोध्या को नए भारत के प्रतीक के तौर पर परिभाषित किया है। बेशक राम मंदिर बनने से अयोध्या का सब कुछ निखर गया है। अब अयोध्या अराजकता, अमावस की कालिमा, सांप्रदायिक टकराव का शहर नहीं, बल्कि उप्र और भारत के आर्थिक विकास की भी ध्वजा लहरा रहा है। अब अयोध्या सूर्यवंश, इक्ष्वाकु वंश, रघुकुल की ध्वजा लहरा रहा है। राम भारत के सांस्कृतिक, सनातनी संघर्ष के एक हिस्से के किरदार हैं। राम कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि मूल्य, अनुशासन, मर्यादा, दिशा के प्रतीक–पुरुष हैं। यकीनन राम ही भारत हैं और देश आज राममय है, प्रधानमंत्री मोदी के ये शब्द एकांगी और अधूरे हैं। भारत राममय के साथ–साथ शिवमय, कृष्णमय, गणेशमय, जैनमय, बौद्धमय, सिखमय, यीशूमय भी है। देश में बड़ी आबादी इस्लाममय भी है। जब भारत में इस्लाम और ईसाई धर्म नहीं थे, तब भी राष्ट्र का अस्तित्व था। उसकी सभ्यता–संस्कृति वैदिक काल–सी प्राचीनतम है। इन देवताओं और भगवानों में आस्था, श्रद्धा और भक्ति–भाव रखने वाले श्रद्धालु भी असंख्य हैं। वे श्रीराम के साथ अपने आराध्य को भी 'पूजनीय' मानते हैं। जिस राष्ट्र में 33 करोड़ देवताओं की कल्पना की गई है और उनमें से कुछ की प्रतिमाएं राम मंदिर के परिसर में ही स्थापित की गई हैं, उनके खूबसूरत मंदिर भी बनाए गए हैं, उस राष्ट्र में राम की ही चिंता करना, उन्हें ही महिमामंडित करना एकांगी ही है। सभी देवता और भगवान प्रभु श्रीराम में ही निहित नहीं हैं। उनके अस्तित्व और उनकी मान्यता भिन्न हैं। प्रधानमंत्री मोदी भारत को 'राममय' ही चित्रित नहीं कर सकते। अन्य भगवानों के अस्तित्व भी 'राममय' नहीं हैं। अभी सदियों के घाव टीस रहे हैं, दर्द भी शांत नहीं हुआ है, क्योंकि सनातन के ध्वज–पुरुष राम ही नहीं हैं। छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, पृथ्वीराज चौहान, अहिल्या बाई होलकर, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर गुरु तेगबहादुर तक कई भारत मां के जांबाज सपूत रहे हैं, जिन्होंने मुगलों, आक्रांताओं के खिलाफ, सनातन और हिंदू धर्म की रक्षा की, लड़ाइयां लड़ीं, बलिदान दिए, भारत को कलंकित या झुकने नहीं दिया। उनका सांस्कृतिक और राष्ट्रीय योगदान प्रभु श्रीराम से कमतर नहीं है। उनके भी महामंदिर बनाए जाएं। उनके शिखरों पर भी केसरिया ध्वजा फहराई जाए। खुद प्रधानमंत्री सिख गुरु तेगबहादुर के 'शहीदी दिवस' के मौके पर कुरुक्षेत्र गए थे। सिख गुरु के सनातनी संघर्ष और बलिदान का उन्होंने उल्लेख भी किया था, लेकिन प्रधानमंत्री ने 'गुरुमय' शब्द का प्रयोग नहीं किया। चूंकि प्रधानमंत्री मोदी पूरे देश के 'कार्यकारी प्रमुख' हैं, शासनाध्यक्ष हैं, लिहाजा 'राममय' को ही सनातन मान लेना उनकी भेदभावी सोच है। प्रधानमंत्री के लिए सभी धर्म, इस्लाम भी, समान, गरिमामय और महत्वपूर्ण हैं। बेशक बहुत कम मुसलमान प्रधानमंत्री की पार्टी भाजपा को वोट देते हैं। बहरहाल अयोध्या में प्रभु राम का भव्य मंदिर बना है, तो अर्थव्यवस्था की ही कायापलट हो गई है। अब अयोध्या पंचतारा होटलों, अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे वाला शहर है। सिर्फ अयोध्या का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) ही 10,000 करोड़ रुपए से अधिक है। अयोध्या की पर्यटन अर्थव्यवस्था 2028 तक 18,000 करोड़ रुपए से अधिक के राजस्व वाली होगी। जून, 2025 तक 23.82 करोड़ पर्यटक और रामभक्त अयोध्या जा चुके थे। रामलला की प्रतिमा स्थापित करने के दिन से 45 करोड़ से ज्यादा भक्त प्रभु राम के दर्शन कर चुके हैं।

प्रश्न आपदा या पंचायती चुनाव

तपोवन में शीतकालीन सत्र का आगाज कुछ काम, कुछ नाम करके गुजर गया। सत्र सदन के अंदर रहा, लेकिन मीडिया के नाम बाहर भी पैगाम हो गया। कांग्रेस ने सदन के बाहर भाजपा के एक विधायक की चारित्रिक शंकाओं को प्रदेश की चिंताओं में समाहित करते हुए पूछ डाला बड़ा प्रश्न और विरोध की अपनी मिसाल का भाजपा से पहले झंडा गाड़ दिया। वहां बहुमत का सवाल नहीं था, लेकिन पार्टी ने हल्ला बोल कर बता दिया कि रणनीति अंदर और बाहर बदली है। भले ही भाजपा ने सदन का द्वारा खोलते ही काम रोको प्रस्ताव की घंटी बजा डाली, लेकिन इस पेंच की वजह पर सरकार ने बहस कर डाली। यानी विषय जो भी हो, सरकार हर सवाल का जवाब देने की तैयारी करके आई है। कम से कम अनावश्यक टकराव और वाकआउट जैसे प्रदर्शन से अगर विपक्ष को सत्ता पक्ष रोक ले, तो हिमाचल के सियासी चरित्र की गंभीरता सामने आएगी। पंचायत चुनाव व प्रदेश की राय बनाने के लिए विपक्षी तीर कितने नुकीले साबित होते हैं, इससे हटकर सत्ता की ओर से ओपनिंग का अंदाज बेहतर रहा। बहरहाल राजनीति के प्रदर्शन कौशल के लिए तपोवन परिसर की हवाएं कुछ ऐसी हैं कि जनप्रतिनिधि ज्यादा बोलते, प्रश्न ज्यादा खौलते और फरियादी अपनी अरदास को ज्यादा तौल पाते हैं। यहां पहले ही दिन प्रश्न आपदा हैं या प्रश्न पंचायती चुनाव हैं, इसको लेकर भाजपा के मजमून, कांग्रेस के गूढ़ अर्थों को अनावृत करना चाहते हैं। आपदा का पिटारा किसके सिर पर फूटेगा, यह वो प्रभावित क्या जानें जिनके घर टूटे, रास्ते छूटे और जीवन के सपने बिखर गए। राज्य की प्राथमिकताएं केवल चुनाव की दहलीज पर गिनी जाएंगी या पहले ही दिन विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों की आत्मा को नहीं धो पाएंगे, इसका मलाल होगा। क्या पूरे प्रदेश की बहस केवल राजनीतिक विषयों की अमानत ही बनी रहेगी या हम सत्ता और विपक्ष के किरदारों में यह देखते रहेंगे कि कौन आसमान और कौन परेशान हो रहा है। मसला पंचायत चुनाव कराने का हो, तो किस गांव की तकदीर बदल जाएगी या यह सिद्ध हो जाएगा कि राजनीति बदलने वाली है। सारी विधानसभा या विधानसभा के सारे सत्र भी मिला लें, तो पता करें कि हमारे चुने हुए विधायक कितने सफल रहे। यह कोई प्राइमरी के बच्चों का शोर नहीं और न ही उच्चतर शिक्षित लोगों की भाषा है कि हम यानी मतदाता हर बार अफसोस मना कर, एक पार्टी को हरा कर दूसरी की अंगुली पकड़ लेते हैं। यहां तय तो यह करना है कि हिमाचल में आपदा निकल गई या स्थानीय निकायों की राह पकड़ लें। आखिर प्रदेश की माटी का तिलक पंचायती चुनाव में लगेगा या केंद्र से पूछा जाए कि उसकी राहत के कटोरों में प्रदेश को आर्थिक रूप से अभिशप्त क्यों किया जा रहा है। दो साल पहले आई आपदा की राहत ही अगर दिल्ली से पूरी तरह नहीं पहुंची, तो प्रधानमंत्री द्वारा घोषित पंद्रह सौ करोड़ रुपयों की आरती कौन उतारेगा। विपक्ष ने आपदा और स्थानीय निकाय चुनाव के बीच सरकार के मंतव्यों को सत्ता के तीन साला जश्न से जोड़ा है या किंतु–परंतु हैं और आखेट भी हैं। आपदा अगर पंचायती राज चुनाव को रोक रही है, तो किसी जश्न के घुंघरू किस कीमत पर बंध रहे हैं। ऐसे प्रश्नों की वजह से संविधान दिवस की मर्यादा और मुहूर्त सामने आते हैं। सरकार कहना चाहती है, सदन के भीतर अपनी परिपक्वता दिखाना चाहती है, तो रिपोर्ट कार्ड में तीन साल की हुकूमत का नजराना भरना चाहती है। यानी शीतकालीन सत्र के बाद मंडी में सरकार के तीन साल होने का सत्र, कुछ कहने की ओर कुछ वादा निभाने की बात कहना चाहता है। बहरहाल, अपनी–अपनी ओपनिंग में सत्ता और विपक्ष ने बता दिया कि अभी मुद्दे बहुत, मजमून बहुत हैं, सीधी बात होगी तो मालूम होगा किसकी कितनी बारात होगी। राजनीति के बाराती यानी नागरिक और उनके सरोकार से जुड़े प्रश्न बहुत छोटे हो सकते हैं। मसलन गेहूं बीजने वाला किसान डर रहा है कि कल जब फसल दाने देने के लिए तैयार होगी, तो आवारा पशु किसके खूंटे से बांधे जाएंगे। धर्मशाला के तपोवन में पंचायती चुनावों के प्रति संवेदना क्या ग्रामीण व्यवस्था के प्रति भी है। गांव से शहर तक बंदरों की उछल कूद ने नागरिकों से खेत, बागीचे और घर का अमन चैन छीन लिया, लेकिन बहस में कोई और कूद रहा है।

अब नए पर्यटन की दरकार

बिलासपुर की झील में डूबे एक प्राचीन शहर के मंजर और ऐतिहासिक घुंघरुओं का शोर अंततः अब तैरती किश्तियों में आगे बढ़ने के किनारे खोज रहा है। तीन दिवसीय जल तरंग जोश महोत्सव के बीच वीकेंड डेस्टिनेशन के ख्वाब और पुख्ता सुबूतों के साथ वाटर स्पोर्ट्स और पैराग्लाइडिंग की उपस्थिति में झंकृत माहौल। फोरलेन परियोजनाओं की खूबी यह भी कि पर्यटन डेस्टिनेशन के रूप में हिमाचल अपने भीतर एक नए पर्यटन का आगाज कर सकता है। जब बिलासपुर से चंडीगढ़ जैसे शहर की दूरी डेढ़–दो घंटे की हो जाए, तो पर्यटन की संस्कृति में मनोरंजन, साहसिक खेलों और रोमांच की दुनिया का बसेरा भी नजदीक आ जाता है। जो कल तक मनाली–शिमला की राह पर थे, वे आज कसौली और बिलासपुर में रुक रहे हैं। यह दीगर है कि बिलासपुर को अपने भीतर पर्यटन पैकेज को निर्मित करना है। ठीक इसी तरह हिमाचल की तमाम डेस्टिनेशन के मध्य नए पर्यटन की दरकार है। हम डलहौजी–चंबा जाते पर्यटक को पौंग की तरफ मोड़ें या धर्मशाला–मकलोडगंज के रास्तों पर निकले सैलानियों को ऊना में रोकें, तो सप्ताहांत पर्यटन के विषय बदलेंगे। प्रदेश की नई व बड़ी गतिविधियों, मनोरंजन व रोमांच के लिए बाहरी राज्यों से आने वालों को आसान राहें, तब मिलेंगी अगर देहरादून के पास पांवटा साहिब और रेणुका के साथ नाहन को प्रस्तुत किया जाए। मनाली के सफर को मंडी आसान कर दे और कुफरी से आगे निकलने के लिए रामपुर बुशहर को भी लक्ष्य बना दें, तो नए पर्यटन के लिए नए कदम भी बढ़ेंगे। दरअसल हिमाचल आने वालों के लिए केवल अटल टनल ही एक बिंदु न रहे। मनाली, मकलोडगंज और शिमला ही गंतव्य न रहें। हमने ऊना को सिख पर्यटन की दृष्टि से संवारा ही नहीं। ऊना के आसपास जल क्रीड़ाओं को उभारा ही नहीं। न पौंग के रास्तों पर पर्यटन के डग भरे और न ही भाखड़ा बांध की तरफ देखते हुए ऊना की परिधि में रोमांच के कई लम्हे जोड़े गए। पर्यटन को भीड़ बनने से बचाते हुए सुकून का साथी बनाना है, तो प्रदेश में ग्रामीण पर्यटन को तवज्जो देना होगा। हर विधानसभा क्षेत्र में कम से कम एक पर्यटक गांव चिन्हित हो, तो इस क्षेत्र में कई साधुवाद मिलेंगे। एक मॉडल के तहत पर्यटन गांव को विभिन्न विभागों की योजनाओं से पूरा किया जा सकता है। मसलन शाहपुर के धार कंडी क्षेत्र में पर्यटन गांव की रूपरेखा में ट्राउट फिश, प्राकृतिक कृषि उत्पादन, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, ट्रैकिंग तथा विश्रांति भाव लिए होम स्टे को सीमित परिदृश्य में बढ़ावा मिले, तो पर्यटन का उद्देश्य इंगित होगा। कभी किन्नौर की सांगला वैली एग्रो टूरिज्म की महक से आगे बढ़ी, लेकिन इसे महज व्यापार बनाकर हमने मूल आधार खो दिया। अतः पर्यटन की किसी न किसी विशिष्टता के साथ ऐसे गांव विकसित किए जाएं, जहां सैलानी अपनी रुचि अनुसार कहीं वाटर स्पोर्ट्स, कहीं दृश्यावलियों, कहीं धार्मिक भावना, कहीं ग्रामीण जीवन, कहीं ट्राइबल जीवन, कहीं पौराणिक परंपराओं, तो कहीं शांत चरागाहों या जंगलों से अटे प्राकृतिक या एग्रो परिदृश्य का संसर्ग ढूंढ पाएं। हर पर्यटन गांव का थीम, तरक्की और विकास योजनाओं का चरित्र पूर्व निर्धारित तथा सामुदायिक जिम्मेदारी से ओतप्रोत रखना होगा, ताकि सैलानी नित नए अनुभव के बीच कुछ समय गुजार दे। इस तरह कई गांव जल शक्ति विभाग की जलापूर्ति या सिंचाई परियोजनाओं–बांधों से जुड़ जाएंगे। वाटर शैड योजनाओं को अगर पर्यटन वाटर शैड योजना बना के देखें, तो आकर्षण बढ़ जाएगा। किसी प्राचीन बावड़ी, किले, मैदान या वास्तुकला को पर्यटन संरक्षण से जोड़ें तो धरोहर गांव निकल आएंगे। प्रदेश विपणन बोर्ड, सार्वजनिक आपूर्ति निगम, मिल्क फेडरेशन, हिम बुनकर तथा खादी बोर्ड अगर अपने–अपने विस्तार में पर्यटकों को जोड़ लें, तो इन्हीं के उत्पादों की प्रस्तुति में हाईवे टूरिज्म के साथ–साथ पर्यटन गांव भी विकसित हो जाएंगे। हर प्रमुख सडक पर दस से पंद्रह किलोमीटर की दूरी पर सेल्फी प्वाइंट, पेट्रोल पंप, फूड मार्ट, ऑटोमोबाइल सर्विस स्टेशन, गिफ्ट सेंटर और हाट बाजार बनाकर स्वयं सहायता समूहों, महिला मंडलों तथा सहकारी सभाओं को अवसर दें, तो पर्यटन की लंबी दूरियां आसान पड़ाव में विभक्त हो जाएंगी।

डबल मर्डर से दहला गोरखपुर

मां–बेटी का कत्ल: आंगन से कमरे तक खून ही खून... विमला ने किया था संघर्ष, किसी अपने ने ही दोनों को मार डाला

गोरखपुर,संवाददाता। गोरखपुर में डबल मर्डर मामले में ऑटो चालक समेत दो संदिग्ध हिरासत में लिए गए हैं। 45 के बयान दर्ज किए गए हैं। मां–बेटी की हत्या का पर्दाफाश करने के लिए क्राइम ब्रांच, सर्विलांस समेत पुलिस की पांच टीमें लगीं हैं। फॉरेंसिक साक्ष्य और पड़ोसियों से पूछताछ में हत्याकांड में किसी अपनों के हाथ की आशंका है। गोरखपुर के शाहपुर थाना इलाके के घोषीपुरवा मोहल्ले में सोमवार देर रात हुई मां–बेटी की हत्या के मामले की पुलिस ने जांच तेज कर दी है। मामले में ऑटो चालक समेत दो संदिग्धों को हिरासत में लेकर पुलिस पूछताछ कर रही है। करीब 45 लोगों के बयान दर्ज किए जा चुके हैं। पुलिस की क्राइम ब्रांच, सर्विलांस, स्वॉट और स्थानीय पुलिस की पांच टीमें मामले के पर्दाफाश में लगी हैं। मामले में मंगलवार देर रात पुलिस ने मृतका शांति देवी की बेटी लखनऊ निवासी सुशीला की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ हत्या की धारा में प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सोमवार देर रात अज्ञात हमलावरों ने शांति देवी (75) और उनकी बेटी विमला जायसवाल (55) की हथौड़ा से सिर पर वार कर हत्या कर दी गई थी।

दोनों के शव कमरे में खून से सने मिले थे। पुलिस ने मौके पर फॉरेंसिक और डॉग स्क्वॉड की टीम संग पहुंचकर जांच की।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, मृतका विमला और शक के दायरे में आए पड़ोसी ऑटो चालक के मोबाइल की कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) खंगाली गई। इसके आधार पर कई अहम सुराग मिले हैं। जांच में सामने आया कि स्थानीय ऑटो चालक लगातार एक प्रॉपर्टी डीलर से संपर्क में था, जिसने पांच वर्ष पहले मृतका शांति देवी की बेटी सुशीला से उनकी मकान का 55 लाख रुपये में रजिस्टर्ड एग्रीमेंट किया था।

घटनास्थल पर बुलाए गए खोजी कुत्ता भी ऑटो चालक के घर की ओर ही गया था। इसके बाद पुलिस की शंका और गहरी हो गई। सीडीआर से यह भी पुष्ट हुआ कि घटना की रात दो बजे तक ऑटो चालक अपने साथियों के साथ रेलवे स्टेशन के पास शराब पी रहा था। देर रात तक उसकी लोकेशन घर के इर्द–गिर्द घूमती मिली, जो उसे संदेह के दायरे में ले आई है। पुलिस उससे सख्ती से पूछताछ कर रही है और उसकी गतिविधियों का क्राइम रिकॉर्ड भी खंगाला जा रहा है।

फॉरेंसिक जांच में इनसाइड एंगल मजबूत

क्राइम सीन की बारीकी से जांच कर रहे फॉरेंसिक विशेषज्ञों ने कमरे में संघर्ष के निशान, खिड़की–दरवाजे और शवों की स्थिति का विश्लेषण किया। जांच में यह बात सामने आई कि घर में जबरन घुसने या ताला तोड़ने के कोई स्पष्ट निशान नहीं हैं। इससे पुलिस को 'इनसाइड एंगल' यानी किसी परिचित या भरोसेमंद व्यक्ति की ओर से वारदात को अंजाम दिए जाने की आशंका गहरा गई है। वहीं पड़ोसियों से पूछताछ में पुलिस को कई छोटे–बड़े इनपुट मिले हैं। कुछ लोगों ने बताया कि मृतक विमला बीते कुछ समय से तनाव में थीं और कभी–कभी घर में आने–जाने वाले व्यक्तियों को लेकर असहज दिखाई देती थीं। हालांकि उनका किसी से खुला विवाद सामने नहीं आया।

देवरानी को अस्पताल में देखने आई महिला ने चुराया नवजात

गोरखपुर,संवाददाता। पडरौना कोतवाली के मनिकौरा गांव निवासी माया देवी के चचेरी देवरानी पूनम देवी को तीन दिन पूर्व प्रसव मेडिकल कॉलेज में हुआ था। देवरानी की बेटी एमसीएच विंग में भर्ती थी। इसे देखने के लिए मंगलवार को माया गई थी। यूपी के कुशीनगर स्थित मेडिकल कॉलेज के एमसीएच विंग से चोरी गए नवजात सकुशल पडरौना कोतवाली के मनिकौरा गांव के पश्चिम टोला से पुलिस ने बरामद कर लिया। पुलिस की सक्रियता के चलते 30 घंटे बाद सफलता मिली। नवजात को चोरी करने वाली महिला घर छोड़कर भाग गई है। पुलिस के अनुसार वह अपनी चचेरी देवरानी के बच्चे को देखने मेडिकल

कॉलेज में आई थी और रात में रेकी करने के बाद नवजात को चुरा ले गई। नवजात के बरामद होने के बाद पुलिस ने राहत की सांस ली है। नवजात को वार्ड में भर्ती करा दिया गया है।

पडरौना कोतवाली के मनिकौरा गांव निवासी माया देवी के चचेरी देवरानी पूनम देवी को तीन दिन पूर्व प्रसव मेडिकल कॉलेज में हुआ था। देवरानी की बेटी एमसीएच विंग में भर्ती थी। इसे देखने के लिए मंगलवार को माया गई थी। पूरी रात रेकी करने के बाद बुधवार को एमसीएच वार्ड में भर्ती रीना के नवजात बेटे को उसकी मां बनकर दूध पिलाने के बहाने चोरी कर लेती गई। नवजात चोरी होने के बाद हड़कंप मच गया। जांच में जुटी पुलिस को मेडिकल कॉलेज से मिले सीसीटीवी फुटेज में स्पष्ट नहीं कुछ दिखाई दिया, इसके बाद पुलिस दिन और समय के हिसाब से रविंद्र नगर से पडरौना तक वह महिला गोद में लेकर जा रही है। इसके बाद एसपी ने चारों तरफ गायब नवजात के बारे में जानकारी के लिए पंपलेट चस्पा कराने के अलावा सोशल मीडिया पर भी वायरल कराए थे, मनिकौरा के प्रधान प्रतिनिधि हरेंद्र साहनी ने बताया कि शाम को करीब 7 बजे गांव की माया देवी आई और बताई कि मेडिकल कॉलेज से जो नवजात गायब हुआ है।

उसे मैं लाई हूं, इसके बाद प्रधान प्रतिनिधि उसे घर जाकर देखते हुए कपड़े में लिपटा नवजात पड़ा है। इसके बाद प्रधान प्रतिनिधि ने एसपी को जानकारी दिया। प्रधानपति ने कपड़ा खरीदकर नवजात के लिए मंगाया। इसके बाद महिला अपने बच्चियों को घर पर छोड़कर भाग गई है। इसकी भनक आस–पास के लोगों को भी नहीं लगी।

नाबालिग लड़कियों का निकाह... नियमों को दरकिनार

ब्रिटिश मौलाना के घर में संचालित था अवैध गर्ल्स हास्टल

गोरखपुर,संवाददाता। ब्रिटिश मौलाना के घर में अवैध गर्ल्स हॉस्टल संचालित था। नियमों को दरकिनार करके मदरसे के साथ हॉस्टल चलाता था। मेरठ और नोएडा जिले तक की लड़कियां हॉस्टल में रहतीं थीं। ब्रिटिश मौलाना शमसुल हुदा खान मदरसे के साथ ही नियमों को दरकिनार करते हुए गर्ल्स हॉस्टल भी चलाता था। कुछ लोगों ने इसकी शिकायत भी की लेकिन जिम्मेदारों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। बताया जाता है कि गर्ल्स हॉस्टल में अधिकतर दूसरे जिलों और दूरदराज से आकर मदरसे में तालीम ले रही लड़कियों को रखा जाता था। मौलाना पर ब्रिटेन में नाबालिग लड़कियों का निकाह कराने के आरोप भी लगे थे ऐसे में मुमकिन है कि हॉस्टल की जांच होती तो कुछ बड़े मामले खुल सकते थे।

गोश्त मंडी रोड पर संचालित मदरसा कुल्लियातुल बनातिर रजविया में 336 छात्राओं को पंजीकरण है। इनमें कुछ स्थानीय छात्राओं के साथ ही नोएडा,

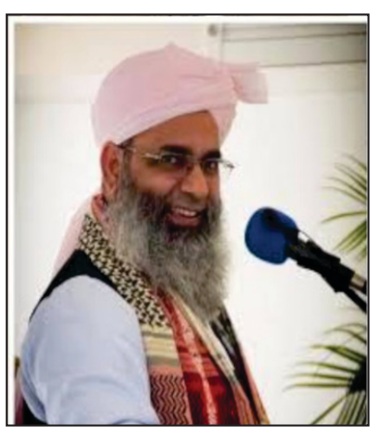

गाजियाबाद और मेरठ तक की तमाम छात्राएं तालीम ले रहीं थीं।

बाहरी छात्राओं के लिए बिना विभाग में पंजीकरण कराए हॉस्टल की भी व्यवस्था की गई थी। दोबारा मदरसा सील होने से पूर्व ही शिकायतकर्ता अब्दुल हकीम खान ने प्रबंध तंत्र पर बिना स्थानीय प्रशासन अथवा प्राधिकरण की स्वीकृति के नाबालिग लड़कियों का हॉस्टल संचालित किए जाने की शिकायत की थी। यह हॉस्टल मोतीनगर स्थिति मकान में संचालित किया जा रहा था। अब्दुल हकीम के मुताबिक हॉस्टल में लड़कियों की सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं की गई थी।

मदरसा परिसर में हॉस्टल संचालन का कोई प्रमाण नहीं

अवैध रूप से हॉस्टल संचालित किए जाने की शिकायत पर जब अधिकारी जांच के लिए पहुंचे तो मदरसा परिसर में ही हॉस्टल तलाशते रहे जबकि हॉस्टल वहां से दूर मोतीनगर में मौलाना के घर में संचालित हो रहा था।

मदरसा परिसर में हॉस्टल संचालन का कोई प्रमाण नहीं मिला। बाद में मदरसा सील होने पर छात्राओं के अभिभावक आए और हॉस्टल से बच्चियों को ले गए।

नाबालिग लड़कियों का निकाह कराने के लगे थे आरोप

जानकारी के मुताबिक मौलाना शमसुल हुदा खान पर ब्रिटेन में वर्ष–2014 में नाबालिग लड़कियों का जबरन निकाह कराने का मामला स्टिंग ऑपरेशन के जरिये उजागर हुआ था। यह मामला अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मीडिया की सुर्खियों में आया था। इस पर एक डाक्यूमेंट्री भी बनी है। कट्टरपंथी विचारधारा को बढ़ावा देने वाले मौलाना की तकरीरें सोशल मीडिया पर अभी भी हैं।

मदरसे के पंजीकरण के दौरान हास्टल का उल्लेख नहल

अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी प्रवीन कुमार मिश्र ने बताया कि मदरसे के पंजीकरण के दौरान हॉस्टल का कोई उल्लेख नहीं किया गया है। हॉस्टल संचालन के लिए विभाग से अनुमति लेना अनिवार्य है। बिना अनुमति के यदि हॉस्टल चलाया जा रहा था तो उसकी जांच की जाएगी। जांच में सत्यता मिलने पर आगे की कार्रवाई के लिए उच्चाधिकारियों से सिफारिश की जाएगी।

महिला आरक्षी को रंग लगाने में तीन पुलिसकर्मी निलंबित

गोरखपुर,संवाददाता। घटना बलरामपुर कोतवाली थाने की है। वहां 15 मार्च 2025 को होली के दौरान ड्यूटी पर मौजूद मुख्य आरक्षी अमित कुमार, आरक्षी पन्नेलाल और शैलेंद्र कुमार ने एक महिला सिपाही के मना करने के बावजूद जबरन उसे रंग लगाया। महिला आरक्षी ने इस व्यवहार को अभद्रता और असम्मान बताते हुए तत्काल उच्चाधिकारियों से शिकायत की थी। गोरखपुर जिले की बलरामपुर कोतवाली में इस साल होली पर महिला आरक्षी को बिना उसकी सहमति रंग लगाने और अभद्रता मामले में तीन पुलिसकर्मियों को आरोपी बनाया गया है। विशाखा कमेटी की रिपोर्ट आने के बाद बलरामपुर के एसपी विकास कुमार ने तीनों पुलिसकर्मियों को निलंबित कर उनके खिलाफ आपराधिक प्राथमिकी दर्ज कराई है। साथ ही विभागीय जांच के तहत धारा 14(1) की कार्रवाई शुरू कर दी गई है, जिससे तीनों पर बर्खास्तगी की तलवार भी लटक रही है। घटना बलरामपुर कोतवाली थाने की है। वहां 15 मार्च 2025 को होली के दौरान ड्यूटी पर मौजूद मुख्य आरक्षी अमित कुमार, आरक्षी पन्नेलाल और शैलेंद्र कुमार ने एक महिला सिपाही के मना करने के बावजूद जबरन उसे रंग लगाया। महिला आरक्षी ने इस व्यवहार को अभद्रता और असम्मान बताते हुए तत्काल उच्चाधिकारियों से शिकायत की थी। मामले की जांच विशाखा कमेटी को सौंपी गई। कमेटी ने महिला आरक्षी के बयान, मौके पर मौजूद कर्मियों की गवाही और परिस्थितिजन्य साक्ष्य के आधार पर अपनी रिपोर्ट तैयार की। जांच में यह स्पष्ट हुआ कि महिला आरक्षी की सहमति के बिना उसे रंग लगाया गया और अनुशासनहीनता एवं अभद्र व्यवहार किया गया।

बीआरडी के नशामुक्ति केंद्र से दवा की 9,500 गोलियां चोरी

गोरखपुर,संवाददाता। पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि चोर पहले ओएसटी कक्ष में घुसे। यहां उन्होंने रजिस्ट्रेशन रजिस्टर और टेबल पर रखे कागजात जला दिए। इसके बाद मानसिक रोग विभाग की ओपीडी के मुख्य दरवाजे को तोड़कर अंदर प्रवेश किया। विभाग की आलमारी का ताला तोड़कर उसमें रखीं दो मिलीग्राम की 9,500 गोलियां चोरी कर लीं। बीआरडी मेडिकल कॉलेज के मानसिक रोग विभाग में संचालित नशामुक्ति केंद्र (ओएसटी) में मंगलवार शाम दो मिलीग्राम की दवा की करीब 9,500 गोलियां चोरी कर ली गईं। विभाग में रखे कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज भी जले मिले। जानकारी होने पर विभागाध्यक्ष ने प्राचार्य को इसकी सूचना दी। ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा गार्ड की भूमिका संदिग्ध मानी जा रही है। घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और छानबीन शुरू कर दी है। पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि चोर पहले ओएसटी कक्ष में घुसे। यहां उन्होंने रजिस्ट्रेशन रजिस्टर और टेबल पर रखे कागजात जला दिए। इसके बाद मानसिक रोग विभाग की ओपीडी के मुख्य दरवाजे को तोड़कर अंदर प्रवेश किया। विभाग की आलमारी का ताला तोड़कर उसमें रखीं दो मिलीग्राम की 9,500 गोलियां चोरी कर लीं। ये सभी दवाएं नाक के माध्यम से उन मरीजों को दी जाती थीं, जो नशा छोड़ने की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं।

एसआईआर दूसरे चरण में नए मतदाताओं का होगा सत्यापन, रहें सतर्क

गोरखपुर,संवाददाता। विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान गणना प्रपत्र भरने या सत्यापन में किसी से वन टाइम पासवर्ड नहीं मांगा जा रहा है। प्रशासन ने मतदाताओं को इस बारे में आगाह भी किया है कि कुछ अराजकतत्वों की ओर से बीएलओ या निर्वाचन विभाग का प्रतिनिधि बनकर मोबाइल नंबर पर ओटीपी मांगा जा रहा है। ऐसे में सावधान रहें। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के तहत पहले चरण में चार दिसंबर तक मतदाताओं से गणना प्रपत्र लेकर डिजिटाइजेशन का काम चलेगा। इसके बाद दूसरे चरण में नए मतदाताओं के आवेदन का सत्यापन होगा। जिन लोगों ने ऑनलाइन आवेदन किया है उनके घर 4 दिसंबर के बाद बीएलओ जाएंगे और उनसे दस्तावेज लेकर सत्यापन करेंगे। जिले में अब तक करीब 27 प्रतिशत गणना प्रपत्रों को भरकर डिजिटाइजेशन कर दिया गया है। प्रशासन ने भी मॉनिटरिंग तेज कर दी है। हालांकि, शहरी क्षेत्र में राजनीतिक दलों से नियुक्त बीएलओ कहीं नजर नहीं आ रहे हैं। पार्षद बूथों पर जरूर मतदाताओं की मदद में लगे हुए हैं। उधर, नए मतदाताओं के दस्तावेज का सत्यापन के लिए चार दिसंबर के बाद अभियान चलाया जाएगा। आवेदन करते समय जिस दस्तावेज का उन्होंने जिक्र किया है कि उसे प्रस्तुत करना होगा और एक फोटो कॉपी बीएलओ को उपलब्ध कराना होगा।

डीएम दीपक मीणा ने बताया कि एसआईआर का काम तेजी से कराया जा रहा है। लगातार इसकी मॉनिटरिंग की जा रही है। सभी मतदाता गणना प्रपत्र जरूर भरें। लगातार शिविर भी लगवाया जा रहा है कि एक ही जगह मतदान केंद्र के सभी बीएलओ मिल जाएं।

रहें सतर्क...किसी से नहीं मांगा जा रहा ओटीपी

विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान गणना प्रपत्र भरने या सत्यापन में किसी से वन टाइम पासवर्ड नहीं मांगा जा रहा है। प्रशासन ने मतदाताओं को इस बारे में आगाह भी किया है कि कुछ अराजकतत्वों की ओर से बीएलओ या निर्वाचन विभाग का प्रतिनिधि बनकर मोबाइल नंबर पर ओटीपी मांगा जा रहा है। ऐसे में सावधान रहें। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीएम दीपक मीणा ने बताया कि एसआईआर के गणना प्रपत्र को भरने की प्रक्रिया में बीएलओ की ओर से किसी भी प्रकार का ओटीपी नहीं मांगा जा रहा है। इस प्रकार की गतिविधियां साइबर ठगी या धोखाधड़ी के अंतर्गत संदेहास्पद हैं।

बाथरूम में खून ही खून... टूटे हुए प्लास्टिक के टुकड़े

गोरखपुर ,संवाददाता। झंगहा थाना क्षेत्र के जंगल रसूलपुर नंबर दो स्थित लक्ष्मीपुर गांव में चचेरी बहन की शादी में शामिल होने ससुराल से आई शिवानी (20) की रविवार की देर रात गला रेतकर हत्या कर दी गई। शिवानी की आठ महीने पहले देवरिया जिले के रुद्रपुर क्षेत्र के अवस्थी गांव में शादी हुई थी। गोरखपुर में चचेरी बहन की शादी की खुशियों के बीच रविवार की देर रात लक्ष्मीपुर गांव मातम में बदल गया। शादी का संगीत, रंग–बिरंगी रोशनियां और मेहमानों की भीड़ के बीच किसी ने सोचा भी नहीं था कि डोली उठने से पहले ही 20 वर्षीय नवविवाहिता शिवानी की अर्थी उठ जाएगी। बाथरूम में खून से लथपथ उसकी लाश मिलने के बाद पूरा गांव चीख–पुकार से गूंज उठा।

बेटी की हत्या पर रोती बिलखती मां और मृतक शिवानी का फाइल फोटो

बीते 9 मई को ब्याही गई शिवानी की बेरहमी से गला रेतकर हत्या ने सभी को झकझोर दिया।शादी समारोह गांव से लगभग 200 मीटर दूर स्थित एक नए घर में संपन्न हो रहा था। रविवार रात जयमाल कार्यक्रम के बाद शिवानी स्टेज से उतरकर घर चली गई थी। देर रात जब उसकी मां नोहरी देवी घर पहुंचीं तो वह गायब मिली। बड़ी बेटी अन्नू ने बताया कि शिवानी तो घर आई थी, लेकिन इसके बाद वापस शादी में नहीं पहुंची।

परिजनों ने तलाश शुरू की तो घर के पास स्थित बाथरूम के दरवाजे के नीचे से उसका हाथ दिखाई दिया। अंदर देखा तो शिवानी का शव खून से लथपथ पड़ा था। उसके गले पर गहरा कट का निशान था। शरीर पर कई खरोंच व चोट के निशान मिले, जो संघर्ष की ओर इशारा कर रहे थे।

मेरी बेटी को न्याय मिले३मां की चीख से फटा कलेजा

मां नोहरी देवी रोते हुए बोलीं, बेटी की शादी को अभी छह महीने ही हुए थे। पता नहीं किसकी नजर लग गई। मेरी बेटी को न्याय चाहिए। जो भी आरोपी हो उस पर कड़ी कार्रवाई की जाए। वहीं शिवानी के पति भीम निषाद ने भी कड़ी कार्रवाई की मांग की। उनका कहना था कि पत्नी से कभी उसका विवाद नहीं हुआ। वह बहुत सुलझी महिला थी और पूरे घर को संभाल कर रखा था। मुझे खुद समझ में नहीं आ रहा है कि उसकी हत्या क्यों और किसने की। भीम ने कहा कि मेरी पत्नी को इंसाफ मिलना चाहिए। जिसने भी यह किया है उसे सख्त सजा मिले।

प्रेम प्रसंग का शक, कॉल डिटेल से जोड़ रही कड़ियां

पुलिस जांच में प्रेम प्रसंग का एंगल उभरकर सामने आया है। मृतका के मोबाइल की कॉल डिटेल खंगाली जा रही है। गांव के एक युवक पर शक गहराया है, जो घटना के बाद से घर से लापता है।

पुलिस ने एक महिला समेत तीन लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। पुलिस कॉल रिकॉर्ड, मोबाइल लोकेशन और हिरासत में लिए लोगों की पूछताछ के आधार पर कड़ियां जोड़ रही है। एसपी नार्थ ज्ञानेंद्र का दावा है कि जल्द ही आरोपी को पकड़कर मामले का पर्दाफाश किया जाएगा।

घटनास्थल पर संघर्ष के निशान, हथियार नहीं मिला

बाथरूम में खून के छींटे, खरोंच के निशान और टूटे हुए प्लास्टिक के टुकड़े इस बात की गवाही दे रहे हैं कि शिवानी ने खुद को बचाने की पूरी कोशिश की। फॉरेंसिक टीम ने खून, मिट्टी, उंगलियों के निशान और कई नमूने जुटाए हैं। घटनास्थल से कोई भी हथियार बरामद नहीं हुआ है।

चचेरी बहन की शादी में आई नवविवाहिता का कत्ल

गोरखपुर के झंगहा थाना क्षेत्र के जंगल रसूलपुर नंबर दो स्थित लक्ष्मीपुर गांव में चचेरी बहन की शादी में शामिल होने ससुराल से आई शिवानी (20) की रविवार की देर रात गला रेतकर हत्या कर दी गई। शिवानी की आठ महीने पहले देवरिया जिले के रुद्रपुर क्षेत्र के अवस्थी गांव में शादी हुई थी। उसका शव घर के पास बने टॉयलेट में मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने छानबीन की। एसपी नार्थ के नेतृत्व में फॉरेंसिक और डॉग स्क्वॉड टीम ने साक्ष्य जुटाए। जंगल रसूलपुर नंबर दो निवासी प्राथमिक विद्यालय की रसोइया नोहरी देवी ने आठ माह पहले अपनी बेटी शिवानी की शादी देवरिया के रुद्रपुर अवस्थी गांव निवासी भीम निषाद से की थी।

नोहरी ने बताया कि तीन दिन पूर्व शिवानी चचेरी बहन अमिता की शादी में शामिल होने ससुराल से आई थी। रविवार की रात घर से करीब दो सौ मीटर दूर जयमाल का कार्यक्रम चल रहा था। इसी बीच शिवानी स्टेज से उतरकर चली गई। देर रात जब नोहरी घर पहुंचीं तो शिवानी वहां नहीं मिली। बड़ी बेटी से पूछताछ करने पर पता चला कि वह काफी पहले ही घर आ गई थी। परिजनों ने तलाश शुरू की तो घर के पास बने टॉयलेट के दरवाजे के नीचे से हाथ दिखा।

पांच बच्चों की मां प्रेमी संग गई संतानों का भी पति से किया बंटवारा...

ललितपुर,संवाददाता। बच्चे मां को याद कर–कर रो रहे हैं। वे दोनों अपनी दादी और पिता से सवाल कर रहे हैं कि उनकी मां और भाई–बहन कहां चले गए हैं। मासूमों के सवालों का जवाब न तो पिता के पास है और ही दादी के पास। यूपी के ललितपुर जिले के कस्बा पाली के एक मोहल्ले में पांच बच्चों की मां ने प्रेमी के साथ अपनी नई दुनिया बसा ली। दो बच्चों को वह पति के पास छोड़ गई, जबकि तीन बच्चों को अपने साथ ले गई। अब दोनों बच्चे मां को याद कर–कर रो रहे हैं। वे दोनों अपनी दादी और पिता से सवाल कर रहे हैं कि उनकी मां और भाई–बहन कहां चले गए हैं।

मासूमों के सवालों का जवाब न तो पिता के पास है और ही दादी के पास।

महिला की शादी 15 वर्ष पहले कस्बे के एक मोहल्ले निवासी युवक से हुई थी। महिला की चार पुत्रियां और एक पुत्र है। सभी बच्चों की उम्र दस वर्ष से कम की है और सबसे छोटा बच्चा डेढ़ साल का है। कुछ माह पूर्व महिला कहीं चली गई थी। उसके पति को जानकारी हुई कि उसकी पत्नी कस्बा के ही व्यक्ति के घर पर है। इसके बाद पति ने पाली थाना में प्रार्थना प्त्र दिया था। पाली पुलिस ने महिला और उसके प्रेमी को बुलाया कर समझाया। महिला के पति ने भी खूब समझाया, लेकिन महिला अपने प्रेमी के साथ ही रहने की जिद पर अड़ी रही। जब पति ने बच्चों को साथ में रखने के लिए कहा तो महिला नहीं मानी।

इस बीच महिला और उसके पति के बीच आपसी समझौता हुआ। महिला ने दो बेटियों और एक बेटे को अपने पास रखा लिया, जबकि पति को दो बेटियां दे दीं। इसके बाद महिला अपने प्रेमी के साथ रहने चली गई। प्रेम प्रसंग में बच्चों का इस प्रकार से बंटवारा होने की चर्चा कस्बा में खूब हो रही है। वहीं महिला के पति के पास रह रहे दो बच्चे अपने भाई–बहनों से बिछड़ने के गम में हैं।

यह बोले अधिकारी

मामला थाना पाली में आया था। महिला को उसके पति ने खूब समझाया, लेकिन महिला प्रेमी के साथ में रहना चाहती थी। दोनों ने आपस में ही बच्चों का बंटवारा कर लिया है। दोनों यह बात लिखित रूप से दे गए हैं। –

दीपक कुमार, प्रभारी निरीक्षक थाना पाली

अब दोनों बच्चे मां को याद कर–कर रो रहे हैं। वे दोनों अपनी दादी और पिता से सवाल कर रहे हैं कि उनकी मां और भाई–बहन कहां चले गए हैं। मासूमों के सवालों का जवाब न तो पिता के पास है और ही दादी के पास।

महिला की शादी 15 वर्ष पहले कस्बे के एक मोहल्ले निवासी युवक से हुई थी। महिला की चार पुत्रियां और एक पुत्र है। सभी बच्चों की उम्र दस वर्ष से कम की है और सबसे छोटा बच्चा डेढ़ साल का है। कुछ माह पूर्व महिला कहीं चली गई थी। उसके पति को जानकारी हुई कि उसकी पत्नी कस्बा के ही व्यक्ति के घर पर है। इसके बाद पति ने पाली थाना में प्रार्थना प्त्र दिया था। पाली पुलिस ने महिला और उसके प्रेमी को बुलाया कर समझाया। महिला के पति ने भी खूब समझाया, लेकिन महिला अपने प्रेमी के साथ ही रहने की जिद पर अड़ी रही। जब पति ने बच्चों को साथ में रखने के लिए कहा तो महिला नहीं मानी।

इस बीच महिला और उसके पति के बीच आपसी समझौता हुआ। महिला ने दो बेटियों और एक बेटे को अपने पास रखा लिया, जबकि पति को दो बेटियां दे दीं। इसके बाद महिला अपने प्रेमी के साथ रहने चली गई। प्रेम प्रसंग में बच्चों का इस प्रकार से बंटवारा होने की चर्चा कस्बा में खूब हो रही है। वहीं महिला के पति के पास रह रहे दो बच्चे अपने भाई–बहनों से बिछड़ने के गम में हैं।

यह बोले अधिकारी

मामला थाना पाली में आया था। महिला को उसके पति ने खूब समझाया, लेकिन महिला प्रेमी के साथ में रहना चाहती थी। दोनों ने आपस में ही बच्चों का बंटवारा कर लिया है। दोनों यह बात लिखित रूप से दे गए हैं। –

दीपक कुमार, प्रभारी निरीक्षक थाना पाली

नेपाल–बिहार–झारखंड से गोरखपुर तक फैला गांजा तस्करी का नेटवर्क

गोरखपुर,संवाददाता। सूत्रों के अनुसार, नेपाल–गोरखपुर : सोनौली, मुंडेरवा, सिकटा, महाराजगंज–बर्डपुर बॉर्डर से सबसे ज्यादा सप्लाई आती है। यहां से माल सहजनवां, बांसगांव, खजनी व बड़हलगंज क्षेत्र के रास्ते शहर तक पहुंचता है। वहीं ओडिशा–झारखंड–बिहार रूट के लिए तस्कर ओडिशा के मलकानगिरि–कोरापुट क्षेत्रों में उगाए जाने वाले गांजे को पहले झारखंड के चतरा खूंटी तक लाया जाता है। नेपाल, बिहार, ओडिशा और झारखंड तक फैला गांजा तस्करी का नेटवर्क अब गोरखपुर को एक बड़े ट्रांजिट हब में बदल चुका है। पिछले दो वर्षों में पुलिस और नारकोटिक्स विभाग की ओर से की गई कार्रवाई में कई क्विंटल गांजे की बरामदगी ने पूरे अवैध धंधे की परतें खोल दी हैं। यह नेटवर्क नेपाल के तराई क्षेत्र, बिहार के सीमावर्ती इलाकों, झारखंड के जंगलों और यूपी के ग्रामीण इलाकों में गिरोहों के संगठित गठजोड़ से तैयार हुआ है। लगातार मामला सामने आने के बाद नारकोटिक्स विभाग ने भी सख्ती बढ़ा दी है। सूत्रों के अनुसार, गांजा तस्करी का जाल सबसे पहले नेपाल सीमा पर सक्रिय छोटे गिरोहों के साथ शुरू हुआ। नेपाल में कई ऐसे इलाके हैं जहां स्थानीय लोगों के माध्यम से अवैध सप्लाई चैन तैयार की गई। भारत–नेपाल की खुली सीमा तस्करों के लिए सबसे बड़ा हथियार साबित हुई। इसके बाद इस नेटवर्क ने बिहार और झारखंड तक विस्तार लिया। झारखंड के घने जंगल, जहां नक्सल गतिविधियों की आड़ में वर्षों से अवैध खेती होती रही, वहीं बिहार के गया–औरंगाबाद–सासाराम मार्ग तस्करों के लिए सुरक्षित ट्रांजिट कॉरिडोर बन गए। इसी चेन का अंतिम और सबसे उपयोगी पड़ाव गोरखपुर बना, जहां से माल दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और पश्चिम यूपी तक भेजा जाने लगा।

शव की जगह प्लास्टिक के पुतले का अंतिम संस्कार

लकड़ियां सजाकर तैयार की चिता, कफन हटाकर देखा तो सब हैरान

हापुड़,संवाददाता । गढ़ में दो युवक शव की जगह पुतले का अंतिम संस्कार करने पहुंचे। लोगों ने जब चिता से कपड़ा हटाकर देखा तो शव की जगह प्लास्टिक का पुतला मिला। दो युवक हिरासत में लिए गए हैं। दोनों से पूछताछ की जा रही है।

हापुड़ के गढ़मुक्तेश्वर के ब्रजघाट में मंगलवार दोपहर दो युवक एक कार में शव लेकर अंतिम संस्कार के लिए पहुंचे। घाट पर उन्होंने लकड़ियां सजाकर चिता तैयार की और अंतिम संस्कार की प्रक्रिया शुरू ही करने वाले थे कि मौके पर मौजूद एक व्यक्ति को कुछ शक हुआ। शक के बाद कुछ लोगों ने कफन हटाया तो चिता में शव की जगह प्लास्टिक का पुतला था।

यह दृश्य देखकर मौजूद लोग स्तब्ध रह गए। उसी समय दूसरे अंतिम संस्कार के लिए पहुंचे ग्रामीणों ने भी यह नजारा देखा और दोनों युवकों को पकड़ लिया।

कुछ ही देर में वहां पुलिस भी पहुंच गई और दोनों युवकों को हिरासत में ले लिया। बताया जा रहा है कि यह पूरा मामला किसी बड़ी धोखाधड़ी या आपराधिक साजिश की ओर इशारा कर रहा है। चर्चा यह भी है कि किसी जीवित व्यक्ति को मृत

शव की जगह मिला प्लास्टिक का पुतला

दिखाकर बीमे की राशि हड़पने, किसी अपराधी को मृत दर्शाकर कानून से बचाने, या किसी बड़े क्राइम प्लान के तहत यह पुतला चिता पर रखकर जलाने की तैयारी की जा रही थी। फिलहाल पुलिस दोनों युवकों से पूछताछ कर रही है।

जमीन के लिए जल्लाद बने सगे भाई

खूनी खेल का पर्दाफाश

जिनके साथ बचपन में खेला... उन्हीं भाइयों ने मार डाला, हत्या के वक्त हाथ भी न कांपे

: **लखनऊ,संवाददाता।** पुलिस ने सगे भाइयों द्वारा खेले गए खूनी खेल का पर्दाफाश किया है। दो ने मिलकर अपने उसी तीसरे भाई को मार डाला जिनके साथ वो बचपन में खेले थे। हत्या के वक्त उनके हाथ भी नहीं कांपे। राजधानी लखनऊ में बांक नाले में मिली युवक की लाश के मामले में होश उड़ाने वाला खुलासा हुआ है। उसकी हत्या उसी के भाइयों ने जमीन के लिए कर दी। एक कजिन भाई ने भी दोनों आरोपियों का साथ दिया था। मां की तहरीर पर केस दर्ज करके पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार किया है। घटना मोहनलालगंज के गौतमखेड़ा की है। यहां स्थित बांक नाले में अमित की लाश मिली थी। वह राधाकृष्ण खेड़ा गांव का रहने वाला था। मामले में पुलिस ने सगे भाइयों और मौसेरे भाई को गिरफ्तार किया है। इन्होंने पीट–पीटकर उसे मार डाला था। पहले आरोपियों ने भाई के आत्महत्या करने की बात कहकर पुलिस को गुमराह किया था।

पवित्र रिश्ते में टूट रहा भरोसा

- महिलाओं के नाम संपत्ति खरीदने से बच रहे पुरुष
- पुरुष अपनी गाढ़ी कमाई को लेकर संवेदनशील
- सोशल मीडिया भी वैवाहिक जीवन में घोल रहा जहर

भरोसे का संकटः स्टांप ड्यूटी में छूट...

फिर भी महिलाओं के नाम संपत्ति खरीदने से बच रहे पुरुष, घट रहा आंकड़ा

बरेली। महिलाओं के नाम संपत्ति खरीदने पर स्टांप ड्यूटी में एक फीसदी की छूट मिलती है। इसके बावजूद बरेली में बीते चार वर्षों में महिलाओं के नाम संपत्ति खरीदने के आंकड़ों में गिरावट हुई है। इसके पीछे महिला और पुरुष के बीच भरोसे का संकट माना जा रहा है। महिलाओं के नाम संपत्ति खरीदने पर स्टांप ड्यूटी में एक फीसदी की छूट के बावजूद साल दर साल आंकड़ों में गिरावट हो रही है। महिलाओं के नाम बैनामों की संख्या घट रही है।

समाजशास्त्री इसे भरोसे के संकट से जोड़कर देख रहे हैं। वह पुरुष उत्पीड़न की घटनाओं और विवाह जैसे पवित्र रिश्ते में भरोसे की कमी की आशंका जता रहे हैं।

संपत्ति के स्वामित्व में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए स्टांप एवं निबंध विभाग छूट दे रहा है। बरेली में विभागीय आंकड़ों पर गौर करें तो कोरोना काल से पहले जो आंकड़े बढ़ रहे थे, अब उनमें गिरावट हो रही है। इस वर्ष अक्तूबर तक जिले में महिलाओं के नाम से 19,139 बैनामे हुए। वर्ष 2022 में 31,114 महिलाओं के नाम संपत्तियों की रजिस्ट्री हुई थी। वर्ष 2025 में अब तक 41,227 रजिस्ट्री से 3,48,19,63,753 रुपये का राजस्व मिला है।

इसमें 22,108 पुरुषों के नाम हुई रजिस्ट्री से 3,25,70,68,834 रुपये और 19,139 महिलाओं के नाम रजिस्ट्री से 22,48,94,919 रुपये राजस्व मिला।

आंकड़ों बताते हैं कि महिलाओं के नाम से उच्च मूल्य की संपत्ति खरीदने से भी पुरुष पीछे हट रहे हैं।

पुरुषों का बढ़ता उत्पीड़न और त्रिकोणीय प्रेम प्रसंग बन रहे वजह

बरेली कॉलेज के समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्ष प्रो. नवनीत कौर आहूजा ने बताया कि बीते दो–तीन वर्षों में पति पर पत्नी के हिंसक होने के मामले बढ़े हैं।

ज्यादातर मामलों में प्रेम–प्रसंग उजागर हुए। उत्तर प्रदेश समेत देशभर में ऐसी घटनाएं सामने आने से पुरुष वर्ग आशंकित है। इससे पत्नी पर भरोसा डगमगाया है। एक बार पत्नी के नाम से संपत्ति खरीदने पर भविष्य में खरीद–बिक्री का निर्णय पुरुष नहीं ले सकता। पुरुष छूट से ज्यादा अपनी गाढ़ी कमाई को लेकर संवेदनशील हैं।

सोशल मीडिया भी जिम्मेदार

जिला अस्पताल के मनोचिकित्सक डॉ. आशीष कुमार के मुताबिक, सोशल मीडिया भी वैवाहिक जीवन में जहर घोल रहा है। टेलीमानस पर लगातार इससे संबंधित कॉल आती रहती हैं। इसमें घर से निकलने के बाद पत्नी के सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने और पूछने पर संतोषजनक जवाब न देने, महिलाओं द्वारा ज्यादा वक्त फोन पर बिताने और ससुराल पक्ष के साथ कम रहने, छोटी–छोटी बातों पर झगड़ने या ताना मारने की शिकायतें बढ़ी हैं। इससे रिश्तों की डोर कमजोर हो रही है। जबकि पुरुषों पर महिलाओं द्वारा शक के मामले कम हुए हैं।

पत्नी का कत्लः 'पापा करते थे मम्मी की पिटाई...

सहमे बच्चे नाना को देख फूट-फूटकर रोए, पति ने इसलिए किया मर्डर

प्रतापगढ़ ,संवाददाता। एक शख्स ने गला रेतकर पत्नी की हत्या कर दी। छोटे बेटे के स्कूल से लौटने पर वारदात की जानकारी हुई। आरोपी पति अपनी पत्नी पर शक करता था। सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच की तो बेड के नीचे से उस्तरा मिला है। उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ से सनसनीखेज खबर सामने आई है। यहां शहर के स्टेशन रोड पर बुधवार सुबह पति ने उस्तरा से गला रेतकर पत्नी की हत्या कर दी। हत्या में प्रयुक्त उस्तरा बेड के नीचे मिला। मृतका के पिता ने दामाद के खिलाफ हत्या की प्राथमिकी दर्ज कराई है। फॉरेंसिक टीम के साथ पहुंचे पुलिस अधीक्षक दीपक भूकर ने घटनास्थल छानबीन की। स्टेशन रोड निवासी संतोष शर्मा अपने परिवार के साथ मकान के ऊपरी हिस्से में रहता है। नीचे वाले हिस्से में पिता जगन्नाथ शर्मा के खराद के कारखाने को संतोष ही चलाता है। बुधवार की सुबह बड़ा बेटा अभय, बेटी अनन्या व छोटा बेटा आयुष स्कूल चले गए। पत्नी मंजू शर्मा (40) घर पर थी।

पुलिस के अनुसार, दोपहर करीब ढाई बजे आयुष स्कूल से घर लौटा। ऊपर कमरे में गया तो चीख पड़ा। भागकर पड़ोसी राजकमल के पास पहुंचा और घटना की जानकारी दी। लोगों की सूचना पर शहर कोतवाल सुभाष यादव पहुंचे। कुछ ही देर में सीओ सिटी प्रशांत राज, एएसपी पूर्वी शैलेंद्र लाल पहुंच गए। थोड़ी ही देर में एसपी दीपक भूकर भी घटनास्थल पर पहुंचे। फॉरेंसिक टीम कमरे से साक्ष्य संकलित करने लगी। मंजू का गला रेता गया था। उसके चेहरे पर भी धारदार वार के निशान मिले। छानबीन के दौरान कमरे में बेड के नीचे से खून से सना उस्तरा मिला। दूसरे कमरे से संतोष का मोबाइल फोन मिला, जो बंद था। उसे फॉरेंसिक टीम ने अपने कब्जे में ले लिया है। इधर, बेटी के हत्या की खबर मिलने पर कानपुर के पनकी थाना इलाके के गणेश नगर से विश्वकर्मा प्रसाद शर्मा पहुंचे। नगर कोतवाल ने बताया कि संतोष के खिलाफ मृतका के पिता ने हत्या की तहरीर दी है।

गला रेतकर पत्नी का कत्ल

- छोटे बेटे के स्कूल से लौटने पर हुई जानकारी
- पत्नी पर शक करता था पति, लगवाए थे कैमरे
- सीसीटीवी में घर से बाहर जाता दिखा आरोपी

यूपी में 989 करोड़ की जीएसटी चोरी

335 फर्जी फर्मों से 5478 करोड़ का टर्नओवर, मास्टरमाइंड की डायरी से खुला राज

मुरादाबाद,संवाददाता। मेरठ के मास्टरमाइंड इखलाक की डायरी में मिली 535 फर्मों की जांच पूरी हो गई है। इसमें राज्य कर विभाग को पता चला है कि 335 फर्जी फर्मों के जरिए 5478 करोड़ का टर्नओवर किया गया। इसके साथ ही 989 करोड़ की जीएसटी चोरी की गई। जीएसटी चोरी के आरोप में गिरफ्तार मेरठ के मास्टर माइंड इखलाक की डायरी में मिलीं 535 फर्मों की जांच राज्य कर विभाग ने पूरी कर ली है। इस गिरोह ने 335 फर्जी फर्मों पर देशभर में 5478 करोड़ का टर्नओवर किया। इसके साथ ही जीएसटी चोरी का आंकड़ा 989 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। जांच में 200 फर्मों पर लेनदेन होना नहीं पाया गया। राज्य कर विभाग के अधिकारी इसे देश की सबसे बड़ी जीएसटी चोरी मान रहे हैं। जीएसटी चोरी की जांच कर रही एसआईटी के हत्थे चढ़े आरोपी इखलाक की डायरी में 535 फर्मों के नाम और मोबाइल नंबर मिले थे। बाद में एसआईटी ने डायरी में मिले सबूतों को राज्य कर के अधिकारियों को सौंप दिए। इसके बाद राज्य कर के अपर आयुक्त ग्रेड–1 अशोक कुमार सिंह के नेतृत्व में अधिकारियों ने फर्मों की जांच कराई। करीब चार दिनों तक चली जांच में 535 में से 200 फर्मों पर कोई लेनदेन होना नहीं पाया गया। एके इंटरप्राइजेज से जुड़ीं 335 फर्मों पर 5478.35 करोड़ का कारोबार किया गया। यह कारोबार देश के अलग–अलग राज्यों में दर्शाया गया। इसमें 144 फर्मों की जांच पहले ही हो चुकी है। राज्य कर विभाग के मुताबिक सभी फर्मों की जांच पूरी होने के बाद 989.13 करोड़ की जीएसटी चोरी पकड़ी गई है। जांच के दौरान सबसे अधिक दिल्ली और गुजरात की बोगस फर्मों के कनेक्शन मिले हैं। जांच में पता चला है कि गुजरात की बड़ी फर्मों ने सरकार को चूना लगाने के लिए बोगस फर्मों का इस्तेमाल किया है।

राम नाम की स्याही से दिया 10 वर्ष का रोडमैप

राम मंदिर में ध्वजारोहण

अयोध्या,संवाददाता। ध्वजारोहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम मंदिर की पूर्णता के शंखनाद से राष्ट्रीय एकता के नए अध्याय की शुरुआत की। इसी दौरान राम नाम की स्याही से वह देश को आगामी 10 साल का रोडमैप दे गए। इसी रोडमैप के सहारे वर्ष 2047 तक देश को विकसित भारत बनाने का संकल्प भी दोहराया। 500 साल के संघर्षों का प्रतीक रहे राम मंदिर के शिखर पर प्रधानमंत्री ने मंगलवार को धर्मध्वज फहराया तो भारतीय संस्कृति के अभ्युदय का एक नया अध्याय लिखा गया। इस दौरान उन्होंने राम मंदिर और भगवान राम के आदर्शों का हवाला देते हुए अपनी विरासत पर गर्व करने की बात कही। कहा कि देश को आगे बढ़ाना है तो अपनी विरासत पर गर्व पर करना होगा। गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्ति लेनी होगी।1835 में मैकाले नाम के अंग्रेज ने भारत को अपनी जड़ों से उखाड़ने के बीज बोए थे। उसने भारत में मानसिक गुलामी की नींव रखी थी। मैकाले ने जो सोचा था, उसका प्रभाव कहीं व्यापक हुआ। हमें आजादी तो मिली, लेकिन हीन भावना से मुक्ति नहीं मिली। वर्ष 2035 में उस अपवित्र घटना के 200 वर्ष पूरे हो रहे हैं। अगले 10 वर्ष में भारत को गुलामी की मानसिकता से मुक्त करके रहेंगे। इसी के बदौलत वर्ष 2047 तक विकसित भारत अपना स्वरूप लेगा। इस दौरान पीएम ने राम मंदिर के संघर्ष से लेकर सृजन तक की गाथा सुनाई। मंदिर निर्माण के सभी सहयोगियों को नमन किया। सभी दानदाताओं का आभार प्रकट किया। निर्माण से जुड़े श्रमवीर, कारीगर, योजनाकार, वास्तुकार का अभिनंदन करके रामराज्य की परिकल्पना साकार की। साथ ही भविष्य की अयोध्या की अलौकिक झलक की कल्पना भी की। कहा कि अयोध्या विकसित भारत का मेरुदंड बनकर उभर रही है। भविष्य की अयोध्या में पौराणिकता और नूतनता का संगम होगा। सरयू की अमृत धारा और विकास की धारा एक साथ बहेगी। आध्यात्म और तरक्की के एकजुटता किया। उन्होंने भगवान महर्षि महर्षि आर्टि

राम नाम की स्याही से 10 वर्ष का रोडमैप दिया है। साल 2035 तक देश को मानसिकता की गुलामी से मुक्त बनाने का संकल्प लिया गया है। पीएम मोदी ने राम मंदिर के संघर्ष से सृजन तक की गाथा सुनाई। सबके योगदान को नमन किया।

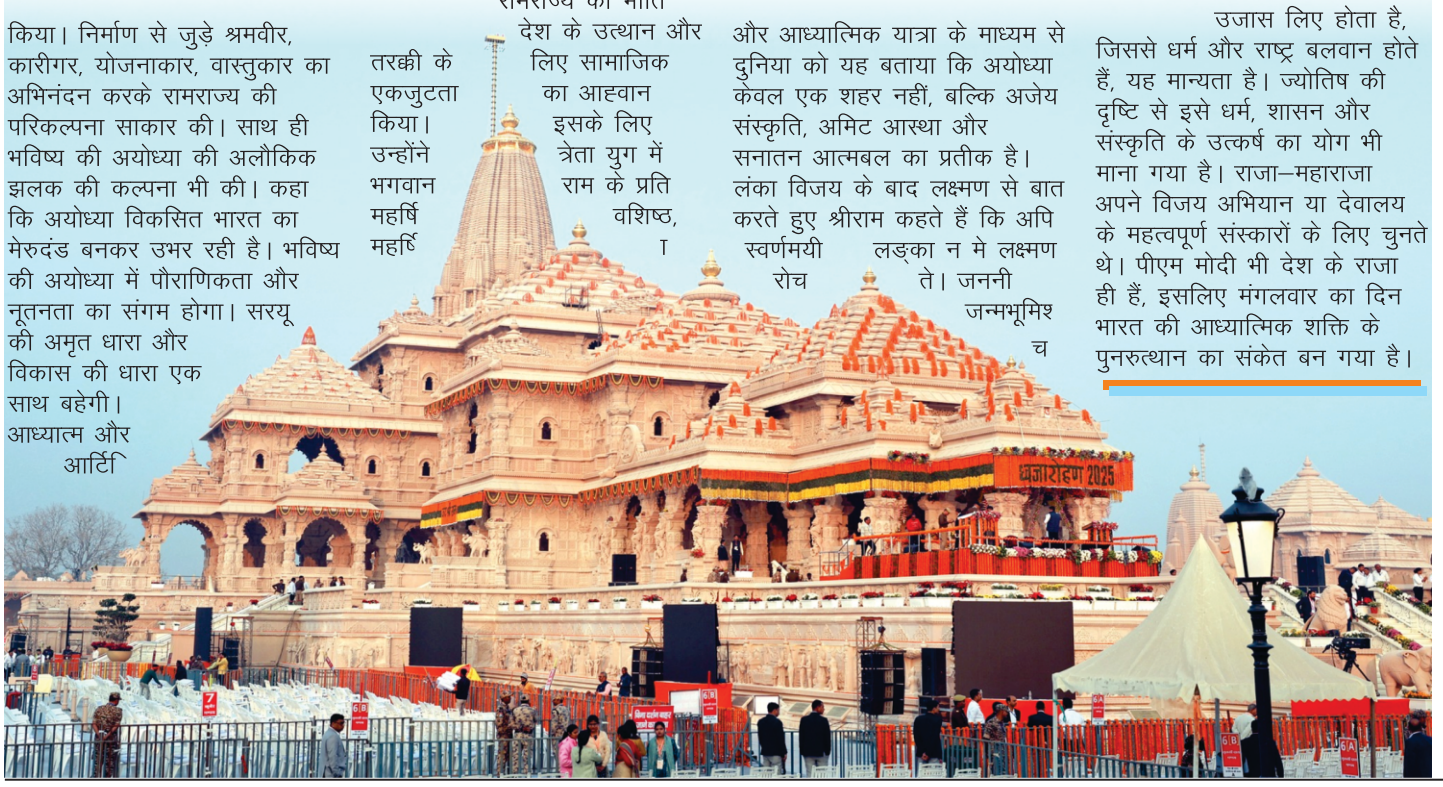

विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य, निषादराज, मां शबरी, हनुमान के योगदान का उदाहरण दिया।

अजेय अयोध्या से पूरे विश्व को संदेश दे गए मोदी

अयोध्या का अर्थ है जिसके साथ युद्ध करना संभव न हो या अजेय... यानी जिसे जीता न सके वह नगर मंगलवार को उस ऐतिहासिक सत्य का पुनः प्रमाण बना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यहां पहुंचे और अपने आचरण, संदेश फशियल इंटेलिजेंस का तालमेल दिखेगा। भगवान राम के विचार हमारी प्रेरणा बनेंगे और शीघ्र ही भारत विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। उन्होंने रामराज्य की भांति देश के उत्थान और लिए सामाजिक का आह्वान इसके लिए त्रेता युग में राम के प्रति वशिष्ठ, ा और आध्यात्मिक यात्रा के माध्यम से दुनिया को यह बताया कि अयोध्या केवल एक शहर नहीं, बल्कि अजेय संस्कृति, अमिट आस्था और सनातन आत्मबल का प्रतीक है। लंका विजय के बाद लक्ष्मण से बात करते हुए श्रीराम कहते हैं कि अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोच ते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी....अर्थात हे लक्ष्मण! यह लंका सोने से बनी है, फिर भी मुझे अच्छी नहीं लगती, क्योंकि माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। श्रीराम को अयोध्या सबसे अधिक प्रिय थी इसलिए लंका विजय कर जब अयोध्या लौटे थे तो सबसे पहले अयोध्या वासियों से मिले। पीएम मोदी की अयोध्या यात्रा ने उसी भाव को जीवंत किया। पीएम वैसे तो इससे पहले पांच बार अयोध्या आ चुके हैं, लेकिन यह यात्रा कुछ अलग थी। पीएम मोदी ने अपनी यात्रा की शुरुआत किसी औपचारिक मंच से नहीं, बल्कि अयोध्या वासियों के दर्शन से की।

एक किलोमीटर के रोड शो के जरिये उन्होंने अयोध्या वासियों का अभिवादन किया। अयोध्या वासियों ने भी पुष्पवर्षा कर उनका अभिनंदन किया। इसके बाद प्रधानमंत्री राम मंदिर पहुंचे, जहां उन्होंने सबसे पहले सप्त मंडपम में दर्शन–पूजन किया। यह मात्र दर्शन नहीं था बल्कि एक गहरा प्रतीकात्मक संदेश था।

सप्त मंडपम के सातों पात्र (गुरु वशिष्ठ, वाल्मीकि, विश्वामित्र, अगस्त्य, निषादराज, अहिल्या, शबरी) वे सात ध्रुव–तत्व हैं जिन पर भारतीय संस्कृति खड़ी है... गुरु, ज्ञान ,तप ,करुणा ,समरसता , स्त्री–शक्ति और निष्कपट भक्ति। पीएम मोदी ने इन सभी स्थलों पर पूजा कर यही संदेश दिया कि राम मंदिर केवल पत्थरों से बना स्मारक नहीं, यह उन मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा है, जिनसे भारत अजेय बनता है।

अभिजीत मुहूर्त में ध्वजारोहण के मायने

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रवीण शर्मा बताते हैं कि अभिजीत मुहूर्त में ध्वजारोहण केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि यह ब्रह्मांडीय शक्ति के आह्वान का विधान है। इस समय ध्वजा फहराना सनातन धर्म की शाश्वत विजय और लोक कल्याण का संकेत है। मंदिर के शिखर पर धर्मध्वजा फहराना सूर्य की ऊर्जा से जुड़ा है और अभिजीत मुहूर्त सूर्य के प्रभाव का सर्वाधिक उजास लिए होता है, जिससे धर्म और राष्ट्र बलवान होते हैं, यह मान्यता है। ज्योतिष की दृष्टि से इसे धर्म, शासन और संस्कृति के उत्कर्ष का योग भी माना गया है। राजा–महाराजा अपने विजय अभियान या देवालय के महत्वपूर्ण संस्कारों के लिए चुनते थे। पीएम मोदी भी देश के राजा ही हैं, इसलिए मंगलवार का दिन भारत की आध्यात्मिक शक्ति के पुनरुत्थान का संकेत बन गया है।

संविधान दिवस

सीएम योगी बोले-हमारा संविधान सशक्त लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक

लखनऊ,संवाददाता। लोकभवन में 76वें संविधान दिवस पर प्रस्तावना का सामूहिक पाठ और शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि डॉ. आंबेडकर की दूरदृष्टि से निर्मित भारतीय संविधान विश्व के सबसे मजबूत लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक है और यह हर नागरिक को समान अधिकार और अवसर प्रदान करता है। 76वें संविधान दिवस के अवसर पर विभिन्न आयोजन हो रहे हैं। उत्तर प्रदेश में भी राज्य के कई स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें लखनऊ स्थित लोकभवन सभागार भी शामिल रहा। यहां संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक पाठ और शपथ ग्रहण कार्यक्रम हुआ, जिसमें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वयं उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि संविधान दिवस की प्रदेश वासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

न्याय, समता और बंधुता भारत के संविधान की मूल भावना हैं। 'भारत रत्न' बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर जी की अद्भुत दृष्टि, प्रखर विचार और अथक परिश्रम से निर्मित हमारा संविधान विश्व के सबसे सशक्त लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक है। संविधान, राष्ट्र की एकता, अखंडता और प्रगति का आधार होने के साथ ही हर नागरिक को समान अधिकार, सम्मान और अवसर भी प्रदान करता है।

हर व्यस्क नागरिकों को मताधिकार दिया गया

सीएम योगी ने कहा, भारत इकलौता देश है जहां पहले दिन से ही हर व्यस्क नागरिकों को मताधिकार दिया गया है। 26 नवंबर 1949 को संविधान अंगीकृत हुआ था और 2015 से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से पूरे देश में इसे संविधान दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। संविधान सभा ने 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में इसे तैयार किया, जिसमें डॉ. राजेंद्र प्रसाद अध्यक्ष थे और डॉ. अम्बेडकर की ड्राफ्टिंग कमेटी की भूमिका अहम रही। लोग स्वतंत्रता की कीमत भूलते जा रहे हैं। क्रूर यातनाएं न देखने–सहने के कारण हर व्यक्ति सिर्फ अधिकार की बात करता है, जबकि अधिकार तभी सुरक्षित होते हैं जब हम कर्तव्यों का पालन करें। कर्तव्यहीनता से लोकतंत्र कमजोर होता है और तानाशाही पनपती है।

विकसित भारत का सपना साकार कर सकेंगे

सीएम योगी ने कहा, संविधान का अपमान मतलब बाबा साहेब अम्बेडकर, स्वतंत्रता सेनानियों और देश की आधी आबादी का अपमान है। कर्तव्यों का पालन कर ही हम आत्मनिर्भर और विकसित भारत का सपना साकार कर सकेंगे।

बहन और युवक की रिकर्डिंग सुन खौल गया खून..

संवाददाता,शाहजहांपुर । इटौरा गौंटिया गांव में खेत पर मंगलवार सुबह मैना देवी (22) की गले पर वार करके हत्या कर दी गई। पुलिस ने शक के आधार पर भाई शेरू को हिरासत में लिया तो उसने बताया कि बहन किसी से मोबाइल फोन पर बात करती थी। इसी बात पर झगड़ा होने के बाद उसने गले पर बांका मार दिया था।शाहजहांपुर के इटौरा गौटिया निवासी मदनपाल की बेटी मैना देवी की हरकतों से परिजन परेशान हो गए थे।

समाज में बदनामी होने की बात कहकर कई बार समझाया, लेकिन वह नहीं मानी। मंगलवार को भाई शेरू जवाब मिलने पर आपा खो बैठा और बांके से दम निकल जाने तक बहन के गले पर वार करता रहा। पुलिस के अनुसार, मृतका के गले व शरीर पर करीब आठ वार किए गए।

मदनपाल की दो बेटियां व आठ बेटे हैं। बड़ी बेटी की शादी हो चुकी है। मैना के विवाह के लिए वह लड़का तलाश कर रहे थे। पांच दिन पहले बेटी के लिए रिश्ता देखने के लिए गए थे, लेकिन परिवार ठीक नहीं लगने पर इन्कार कर दिया। परिजनों के अनुसार, उनके परिवार में सिर्फ एक मोबाइल है। वह भी भाइयों के पास रहता है।

दुनियाभर में छाई दे दे प्यार 2

सुपरस्टार अजय देवगन की रोमांटिक फिल्म दे दे प्यार दे 2 जल्द ही रिलीज के दो वीक पूरे कर लेगी। लेकिन, ये मूवी वर्ल्डवाइड कलेक्शन के मामले में अब भी हार मानने को तैयार नहीं है।

13वें दिन रोमांटिक मूवी ने किया इतना बिजनेस। अजय देवगन की फिल्म है दे दे प्यार दे 2

एंटरटेनमेंट डेस्क। सुपरस्टार अजय देवगन की रोमांटिक फिल्म दे दे प्यार दे 2 ने घरेलू बॉक्स ऑफिस के अलावा इंटरनेशनल मार्केट में अपनी धाक जमाई है। विदेशों में शानदार कमाई करते हुए दे दे प्यार दे 2 ने हर किसी को प्रभावित किया है। हाल ही में ग्लोबली 100 करोड़ का आंकड़ा पार करने वाली दे दे प्यार दे 2 ने दुनियाभर में एक बार फिर से बेहतरीन कलेक्शन की प्रक्रिया को जारी रखा है। इस आधार पर रिलीज के 13वें दिन दे दे प्यार दे 2 के वर्ल्डवाइड कलेक्शन में और अधिक इजाफा देखने को मिला है। ऐसे में आइए जानते हैं कि बुधवार को इस मूवी ने पूरी दुनिया में अब तक अच्छा बिजनेस कर लिया है।

वर्ल्डवाइड कमाल कर रही है दे दे प्यार दे 2

साल 2019 में रिलीज होने वाली फिल्म दे दे प्यार दे के सीक्वल के तौर पर अजय देवगन की इस मूवी ने वाकई दर्शकों का भरपूर मनोरंजन कर रही है। क्रिटिक्स और ऑडियंस की तरफ से दे दे प्यार दे 2 को पॉजिटिव रिस्पॉन्स मिला है, जिसके चलते कमाई के मामले में ये मूवी कमाल करने में कामयाब हुई है। गौर किया जाए दे दे प्यार दे 2 के 13वें दिन के वर्ल्डवाइड कलेक्शन की तरफ तो वह 2 करोड़ के आस–पास रहा है। अब इस रोमांटिक ड्रामा का ग्रॉस बिजनेस 105 करोड़ के पास पहुंच गया है। हालांकि, अभी दे दे प्यार दे 2 अपना बजट निकालने से काफी दूर है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार दे दे प्यार दे 2 की कुल लागत 130 करोड़ से अधिक है। ऐसे में फिलहाल इस मूवी को प्रॉफिट में आने के लिए 30 करोड़ से अधिक कारोबार करना होगा, जोकि अब मुश्किल होता हुआ नजर आ रहा है। ट्रेड एनालिस्ट्स की मानें तो दे दे प्यार दे 2 एक एवरेज फिल्म बनकर रह जाएगी, क्योंकि फिल्म की सफलता के बजट से अधिक कारोबार के आधार पर जुड़े रहते हैं।

पलाश पर लगे स्मृति को धोखा देने के आरोप

आरजे महवश बोली–अगर मेरे होने वाले दूल्हे के डीएम मिले तो पब्लिक कर देना गर्ल्स

मुम्बई,एजेंसी। आरजे महवश ने हाल ही में एक वीडियो शेयर किया, जिसमें उन्होंने चीटिंग और अफेयर को लेकर मजाक किया। यह वीडियो उस वक्त सामने आया है, जब म्यूजिक कंपोजर पलाश मुछाल और क्रिकेटर स्मृति मंधाना की शादी टलने के बाद उनके रिश्ते को लेकर कई अफवाहें फैल रही हैं। कुछ यूजर्स को यह मजेदार लगा, जबकि कुछ लोगों ने महवश को इस वीडियो को लेकर इनसेंसिटिव बताया।

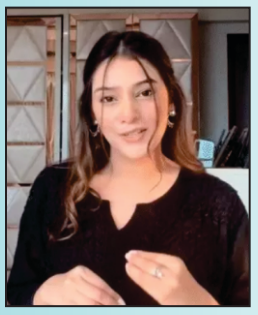

आरजे महवश ने वीडियो में क्या कहा?

दरअसल, आरजे महवश ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर करते हुए कहा, "मर्द भी बड़ी प्यारी चीज होते हैं... जब पूछो, सिंगल ही होते हैं।" इसके बाद उन्होंने कहा, "देखो भाई, मुझे सच या झूठ नहीं पता, पर जब मेरी शादी होगी ना, तो मैं अपना दूल्हा इंटरनेट पर एक हफ्ते पहले लॉन्च करूंगी और अगर मेरा वाला किसी और के डीएम में सुहागरात मना रहा हो तो गर्ल्स, आकर मुझे बता देना। ये मत सोचना कि शादी हो रही है, अब कैसे बताएं।" महवश ने यह भी कहा, "मैं दुनिया में किसी पर भरोसा नहीं करती। कोई भी कुछ भी कर सकता है। अगर किसी के पास उसके डीएम हों, तो उन्हें पब्लिक कर देना, या मुझे दे देना, मैं खुद कर दूंगी। अगर स्नैपचैट पर हो तो दूसरे फोन से रिकॉर्ड कर लेना। शादी से पहले... सुहागरात से पहले भी बता दोगे तो चलेगा। बस बचा लेना दोस्तों प्लीज गर्ल्स, तुम्हारे हवाले वतन साथियों।

प्रियंका के अलावा शो की स्टार कास्ट

अभी तक आधिकारिक तौर पर प्रियंका चाहर चौधरी और ईशा सिंह की पुष्टि हुई थी। सोशल मीडिया पर बाकी कलाकारों के नाम भी सामने आए। लेकिन इस नए प्रोमो से बाकी स्टार कास्ट के नाम और लुक से पर्दा उठ गया है। इस बार इस शो में प्रियंका के अलावा करण कुंद्रा, ईशा सिंह भी अहम भूमिका में नजर आएंगे। वहीं शो में नामिक पॉल, रिभू मेहरा, कुशाग्रे दुआ, निबेदिता पाल और आफरीन दबेस्तानी भी नजर आ सकते हैं।

कब शुरू होगा शो?

नागिन 7, 27 दिसंबर 2025 से शुरू हो रहा है। इस शो को आप हर शनिवार–रविवार रात 8 बजे सिर्फ कलर्स टीवी पर देख सकते हैं। फैंस प्रियंका के नागिन अवतार की बहुत तारीफ कर रहे हैं। सबको लग रहा है कि प्रियंका और ईशा की जोड़ी इस बार धमाल मचा देगी।

पहले के सीजन

नागिन सीरीज पहले से ही बहुत पॉपुलर है। पहले सीजन में मौनी रॉय, फिर सुरभि ज्योति, हिना खान, तेजस्वी प्रकाश, निया शर्मा जैसी कई बड़ी एक्ट्रेस नागिन बन चुकी हैं। अब बारी है प्रियंका चाहर चौधरी की।

एंटरटेनमेंट डेस्क। एकता कपूर के सबसे चर्चित शो 'नागिन' के सातवें सीजन का नया प्रोमो रिलीज हो चुका है। फैंस इस शो का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इस शो से प्रियंका चाहर चौधरी का चेहरा पहले ही रिवीज हो चुका है। वहीं नए प्रोमो में इस शो के बाकी कलाकारों के चेहरों से भी पर्दा उठा दिया गया है।

नागिन 7 का नया प्रोमो

इस बार मुख्य नागिन का रोल प्रियंका चाहर चौधरी निभा रही हैं। उनके साथ ईशा सिंह और करण कुंद्रा भी अहम किरदार में दिखेंगे। प्रोमो में प्रियंका का नागिन लुक बहुत शानदार लग रहा है। प्रोमो की शुरुआत में करण कुंद्रा बोलते हैं, 'तबाही की शुरुआत हो चुकी है'। इसके बाद प्रियंका और ईशा को नाग मंदिर के बाहर दिखाया जाता है। प्रियंका नागिन बनकर अपने दुश्मनों से लड़ने के लिए तैयार नजर आ रही हैं। इस सीजन में पहली बार ड्रैगन भी दिखेंगे, जो शो को और रोमांचक बनाएगा।

नागिन 7' का नया प्रोमो रिलीज हो चुका है। नए प्रोमो के सामने आते ही सीरियल की रिलीज डेट और बाकी स्टार कास्ट का चेहरा भी सामने आ गया है। जानिए कब देख सकेंगे 'नागिन 7'।

दुश्मनों का खात्मा करने आ रही है नागिन

धांसू प्रोमो

नागिन 7

45 साल की उम्र में भी कहर ढाती है ये टीवी क्वीन

मुम्बई,एजेंसी। टीवी की क्वीन श्वेता तिवारी अपनी फिटनेस और खूबसूरती से फैंस के दिलों में राज करती हैं. 2 बार तलाक और 2 बच्चों की मां होने के बाद भी उन्होने 45 साल की उम्र में भी खुद को जवां रखा हुआ है. कई टीवी शोज में अपनी दमदार एक्टिंग से लोगों के दिलों में राज करती हैं. आइए आज आपको उनकी फोटोज और उनके बारे में कुछ चीजें बताते हैं.

टीवी की जानी–मानी एक्ट्रेस श्वेता तिवारी उनको देखकर उनकी उम्र का पता लगाना काफी ज्यादा मुश्किल हो जाता है. आपको बता दें वो 45 साल की हैं.

2 बार तलाक और 2 बच्चों की मां होने के बाद भी उनकी खूबसूरती और फिटनेस बनी हुई हैं. उन्होने अपने करियर की शुरूआत टेलीविजन इंडस्ट्री से की और फिर बॉलीवुड से लेकर ओटीटी तक का सफर तय किया.

सोशल मीडिया पर श्वेता तिवारी काफी एक्टिव रहती हैं और पर्सनल से लेकर प्रोफेशनल लाइफ सुर्खियों में हमेशा से बनी रही है. उन्होने अपनी जिंदगी में काफी सारे उतार–चढ़ाव भी देखें हैं.। अपनी टीवी एक्टिंग से हर घर–घर में काफी ज्यादा छाई हैं. फैंस को उनको टीवी पर देखना काफी ज्यादा पसंद आता है. आजकल की लड़कियां भी उनके फैशन सेंस को फॉलो करती हैं।

गंभीर की देखरेख में टेस्ट में टीम इंडिया

- घरेलू मैदान पर पहली बार 3-टेस्ट मैचों की सीरीज में क्लीन-स्वीप हार (vs न्यूजीलैंड, 2024)।
- 2015 के बाद पहली बार बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी गंवाई। 2024-25 में ऑस्ट्रेलिया ने 3-1 से हराया।
- 25 साल में पहली बार दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज हार, वो भी 2-0 से।
- सिर्फ दो सीरीज़ जीत पाए वह भी निम्न रैंकिंग वाली टीमों के खिलाफ (vs बांग्लादेश और vs वेस्टइंडीज)

गंभीर की देखरेख में खेली गई टेस्ट सीरीज

सीरीज (प्रतिद्वंदी)	मैदान	कुल मैच	विजेता	अंतर
बांग्लादेश	घर	2	भारत	2–0
न्यूजीलैंड	घर	3	न्यूजीलैंड	3–0
ऑस्ट्रेलिया	बाहर	5	ऑस्ट्रेलिया	3–1
इंग्लैंड	बाहर	5	ड्रॉ	2–2
वेस्टइंडीज	घर	2	भारत	2–0
द. अफ्रीका*	घर	2	द. अफ्रीका	2–0

गंभीर की कोचिंग में टीम इंडिया का प्रदर्शन

(घरेलू टेस्ट में)

विवरण	संख्या
सीरीज	3
मैच	9
जीते	4
हारे	5
ड्रॉ	0

क्या टीम इंडिया की शर्मनाक हार के जिम्मेदार गंभीर

घर में टेस्ट का सबसे बुरा दौर !

भारतीय टीम का घरेलू टेस्ट रिकॉर्ड (समयावधि अनुसार)

समय अवधि	कुल टेस्ट	जीते	हारे	ड्रॉ	टाई	हार का प्रतिशत
16 अक्तूबर 2024 से अब तक	7	2	54	0	0	71.42%
1 जनवरी 2013 से 15 अक्तूबर 2024	53	42	4	7	0	7.54%
1 जनवरी 2001 से 31 दिसंबर 2012	59	29	9	21	0	15.25%
1932 से 31 दिसंबर 2000	179	49	42	87	1	23.46%

भारत के नंबर 3 बल्लेबाज

(1 सितंबर 2024 के बाद टेस्ट में)

बल्लेबाज	पारी	रन	औसत	100/50
शुभमन गिल	13	401	33.4	1/1
साई सुदर्शन	11	302	27.5	0/2
करुण नायर	4	111	27.8	0/1
विराट कोहली	2	70	35.0	0/1
वॉशिंगटन सुंदर	2	60	30.0	0/0
देवदत्त पडिक्कल	2	25	12.5	0/0
केएल राहुल	2	24	12.0	0/0

सवाल जो फैंस को परेशान कर रहे...

- क्या भारत को ऑलराउंडर्स की जगह विशेषज्ञों को खिलाना चाहिए ?
- नंबर-तीन की उलझन को कैसे दूर किया जाए ?
- क्या प्लेइंग-11 और बल्लेबाजी क्रम में ज्यादा बदलाव से हो रहा नुकसान ?
- पेस और स्पिन के खिलाफ बल्लेबाजों की तकनीक और टेम्परामेंट पर उठ रहे सवाल ?
- भारतीय स्पिनर्स किस प्रकार फिर से घरेलू परिस्थितियों का बेहतर लाभ उठा पाएंगे ?
- क्या समय आ चुका है जब टेस्ट में भारत बेंच स्ट्रेंथ को और मजबूत करने पर ध्यान दे ?

स्पोर्ट्स डेस्क। सबसे बड़ा सवाल अब यह है कि क्या गंभीर इस टीम को फिर से खड़ा कर पाएंगे या भारत को नए नेतृत्व की तलाश करनी होगी? भारतीय टीम की यह गिरावट उस दौर में आई है जब टीम की देखरेख कोच गौतम गंभीर जैसे चैंपियन खिलाड़ी के हाथों में है। भारतीय टीम की यह गिरावट उस दौर में आई है जब टीम की देखरेख कोच गौतम गंभीर के हाथों में है। सफेद गेंद क्रिकेट में उनकी सफलता सब जानते हैं, लेकिन रेड–बॉल क्रिकेट में उनकी योजनाएं सवालों के घेरे में हैं। भारत की टेस्ट टीम, जिसे कभी घरेलू क्रिकेट की 'अजेय दीवार' कहा जाता था, अब लगातार हार का सामना कर रही है। न्यूजीलैंड के खिलाफ 0–3 की हार के बाद दक्षिण अफ्रीका के हाथों 0–2 की सीरीज हार ने भारतीय क्रिकेट में हलचल मचा दी है। क्रिकेट विश्लेषकों, पूर्व दिग्गजों और फैंस इस हार के लिए भारतीय खिलाड़ियों के साथ–साथ कोच गंभीर को भी जिम्मेदार मान रहे हैं। कोच गंभीर प्रेस कॉन्फ्रेंस में आकर खुद पर आलोचनाओं का जवाब दे चुके हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें हटाने या नहीं हटाने का फैसला बीसीसीआई के हाथों में हैं, लेकिन बोर्ड को उनकी सफलताएं नहीं भूलनी चाहिए। अब एक बड़ा सवाल है क्या भारत की टेस्ट गिरावट के लिए गौतम गंभीर जिम्मेदार हैं? आइए जानते हैं उनके कार्यकाल में ऐसी सात बड़ी वजहें, जिसने भारत के घरेलू किले को ढहाने में अहम भूमिका निभाई।

सुनील गावस्कर ने भारतीय टेस्ट क्रिकेट की गिरती हालत की वजह बताई

स्पोर्ट्स डेस्क। गावस्कर का मानना है कि अगर तैयारी और शेड्यूलिंग नहीं सुधरी, तो भारत की टेस्ट क्रिकेट की पकड़, खासकर घरेलू जमीन पर, और कमजोर होगी। भारतीय टेस्ट क्रिकेट इस समय अपने सबसे कठिन दौर से गुजर रहा है। न्यूजीलैंड के खिलाफ पिछले साल क्लीन स्वीप के बाद टीम इंडिया को बुधवार को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 2–0 से व्हाइटवॉश झेलना पड़ा है। भारत के पूर्व महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने इस गिरावट की सीधी वजह भारतीय टीम की कमजोर तैयारी और गलत शेड्यूलिंग को बताया है। एक इंटरव्यू में उन्होंने साफ कहा कि भारत से ज्यादा विपक्षी टीमों ने मेहनत की और उसी का फायदा उन्हें मिला।

'विपक्षी टीमों की तैयारी बेहतर'

इंडिया टुडे से बातचीत में गावस्कर ने बताया कि न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका ने भारतीय परिस्थितियों के अनुसार खुद को पहले से तैयार किया, जिससे उन्हें फायदा मिला। उन्होंने कहा, 'न्यूजीलैंड भारत आने से पहले श्रीलंका में खेल चुकी थी और वहां की पिचों और मौसम के अनुसार ढल चुकी थी। वहीं दक्षिण अफ्रीका की ए टीम भारत में इंडिया ए के खिलाफ खेल चुकी थी, जिससे उनके कई खिलाड़ियों को पहले से परिस्थितियों का अंदाजा हो गया था।' उन्होंने इसे भारत की हार का सबसे बड़ा कारण बताया।

शेड्यूलिंग पर गंभीर सवाल

गावस्कर ने कहा कि भारत की टीम को बार–बार दो प्रारूपों के बीच घुमाने से खिलाड़ियों में थकावट बढ़ रही है और टेस्ट के लिए आवश्यक तैयारी नहीं हो पा रही। उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलिया में खेली गई वनडे सीरीज की उस समय कोई जरूरत नहीं थी, क्योंकि अगला वनडे वर्ल्ड कप 2027 में है, फिर भी भारत को शेड्यूल पालन करना पड़ा। गावस्कर ने कहा, 'ये सब मार्केट फोर्सेज हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेट मार्केट है, इसलिए हर साल हमें दुनिया भर की टीमें बुलाती हैं। लेकिन ऐसा करने से हमारी टेस्ट क्रिकेट की तैयारी प्रभावित होती है।'

'बीसीसीआई को होना होगा सख्त'

गावस्कर ने बोर्ड से मांग की कि भारत को अपने घरेलू सीजन को प्राथमिकता देनी चाहिए और दूसरे देशों की शर्तों पर नहीं खेलना चाहिए। उन्होंने कहा, 'ऑस्ट्रेलिया अपने घरेलू सीजन में कहीं नहीं जाता। भारत को भी ऐसा ही करना चाहिए। अगर किसी टीम को हमसे खेलना है तो वो भारत आए, हम बीच सीजन में विदेश जाकर टेस्ट, वनडे या टी20 न खेलें।'

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

UPHIN/2023/90814

बृजेन्द्र कुमार

मो0. नं0. 7307180148,9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

भारत अब स्पिन के खिलाफ कमजोर क्यों

रविचंद्रन अश्विन ने बताई बड़ी वजह, बोले- ये अचानक नहीं हुआ...

स्पोर्ट्स डेस्क। अश्विन के बयान ने भारतीय क्रिकेट सिस्टम पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। क्या भारत को फिर से स्पिन–फ्रेंडली घरेलू क्रिकेट, तकनीकी सुधार और लंबे प्रारूप पर प्राथमिकता लौटानी होगी? इसी का जवाब तय करेगा कि क्या भारत टेस्ट क्रिकेट में अपनी खोई पहचान वापस पा पाएगा या नहीं। भारत की टेस्ट क्रिकेट टीम को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मिली करारी हार के बाद कई सवाल उठ रहे हैं। भारत को गुवाहाटी में 408 रनों से हराकर दक्षिण अफ्रीका ने सीरीज में 2–0 से क्लीन स्वीप किया। इस हार ने भारतीय बल्लेबाजों की स्पिन के खिलाफ कमजोरी को उजागर कर दिया। इसी मुद्दे पर बोलते हुए भारत के पूर्व दिग्गज स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने कहा कि अब भारत दुनिया की सबसे खराब स्पिन खेलने वाली टीमों में से एक बन चुका है।

'भारत स्पिन के खिलाफ सबसे कमजोर टीमों में'

अपने यूट्यूब चैनल पर 'ऐश की बात' में अश्विन ने कहा, 'आज के दौर में हम शायद दुनिया के सबसे कमजोर स्पिन खेलने वाले बल्लेबाजी यूनिट हैं। यह अचानक नहीं हुआ, इसके पीछे वजह है।' दक्षिण अफ्रीका के ऑफ–स्पिनर साइमन हार्मर ने दो मैचों में 17 विकेट लिए, जबकि केशव महाराज ने छह विकेट झटके। इससे पहले 2024 में न्यूजीलैंड के एजाज पटेल और मिचेल सैंटनर ने भी भारतीय बल्लेबाजों को परेशान किया था।

'न्यूट्रल क्यूरेटर और बदलती पिच फिलॉसफी'

अश्विन ने बताया कि भारतीय घरेलू क्रिकेट की पिचों ने इस गिरावट में बड़ी भूमिका निभाई। उन्होंने कहा, 'हमारी प्रथम श्रेणी क्रिकेट अब हर जगह न्यूट्रल क्यूरेटर नियंत्रित करते हैं। इसका उद्देश्य बेकार पिचों को रोकना था, लेकिन इसका असर यह हुआ कि हमने स्पिन खेलने की क्षमता खो दी।' उन्होंने कहा कि इस बदलाव से भारतीय टीम विदेशी परिस्थितियों में बेहतर पेस और सीम खेलना सीख गई है, लेकिन स्पिन बल्लेबाजी कमजोर हो गई।

'स्पिन खेलने के लिए स्वीप जरूरी नहीं, डिफेंस जरूरी'

अश्विन ने बताया कि भारतीय बल्लेबाज बेसिक तकनीक भूल चुके हैं। उन्होंने कहा, 'स्पिन खेलने का मतलब यह नहीं कि शुरुआत से स्विप या रिवर्स स्विप खेलो। पहले मजबूत डिफेंस बनाओ, फिर शॉट्स चुनो।' उन्होंने कहा, 'थकाने वाली, धैर्य वाली टेस्ट क्रिकेट। कम से कम न्यूजीलैंड ने रन बनाए और हम पर दबाव बनाने की कोशिश की। दक्षिण अफ्रीका ने ऐसा नहीं किया।'

'दक्षिण अफ्रीका ने खेला असली टेस्ट क्रिकेट'

अश्विन ने दक्षिण अफ्रीका की खेल शैली की तारीफ करते हुए कहा, 'उन्होंने क्लासिक एट्रिशनल टेस्ट क्रिकेट खेला। हर सेशन में 80 रन, सटीक गेंदबाजी, कसा हुआ फील्ड सेट और स्पिनर्स को लंबे स्पेल। इसी तरह की क्रिकेट भारत में जीत दिलाती है।' गुवाहाटी की जीत ने दक्षिण अफ्रीका को 25 साल बाद भारत में पहली टेस्ट सीरीज जीत दिलाई। वहीं, यह हार भारत की रन अंतर से सबसे बड़ी टेस्ट हार रही।

भारत को सुधार कैसे मिलेगा?

अश्विन के बयान ने भारतीय क्रिकेट सिस्टम पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। क्या भारत को फिर से स्पिन–फ्रेंडली घरेलू क्रिकेट, तकनीकी सुधार और लंबे प्रारूप पर प्राथमिकता लौटानी होगी? इसी का जवाब तय करेगा कि क्या भारत टेस्ट क्रिकेट में अपनी खोई पहचान वापस पा पाएगा या नहीं।

अब भारत में नहीं, इंग्लैंड में ही खेलो

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत की मौजूदा स्थिति देखकर यह साफ है कि सिर्फ खिलाड़ियों की नहीं, बल्कि सोच, तैयारी और सिस्टम में बदलाव की जरूरत है। श्रीकांत का तंज भले ही मजाक था, लेकिन उसकी जड़ें सच में छुपे एक गहरे संकट की तरफ संकेत करती हैं। भारत को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 0–2 की शर्मनाक हार क्या लगी, भारतीय क्रिकेट पर सवालों की बौछार होने लगी है। टीम इंडिया, जो कभी घरेलू मैदानों पर अजेय मानी जाती थी, अब लगातार लड़खड़ा रही है। भारत पिछले सात घरेलू टेस्ट में पांच हार चुका है, जो देश के क्रिकेट इतिहास के लिए एक चिंताजनक आंकड़ा है।

'अब भारत को घर पर नहीं खेलना चाहिए'

पूर्व भारतीय कप्तान कृष श्रीकांत ने भारत की हार पर बात करते हुए हल्के–फुल्के अंदाज में बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा, 'मेरे पास एक समाधान है। भारत को न्यूट्रल वेन्यू पर खेलना चाहिए। सारी टेस्ट सीरीज इंग्लैंड में होनी चाहिए।

वहां भारतीय फैंस भी आते हैं और टीम भी अच्छा खेलती है। अब भारत में कोई मैच मत खेलो।' उनकी टिप्पणी मजाक में दी गई थी, लेकिन भारतीय टीम की हालिया परफॉर्मेंस देखकर यह बात पूरी तरह अव्यवहारिक भी नहीं लगती।